शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 13 | उदयपुर शनिवार 15 जुलाई 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

क्या होगा हिन्दी की भाषायी संस्कृति का

-डॉ. मालती शर्मा-

भाषा और बोलियां भाषायी संस्कृति के लोकसांस्कृतिक जीवनमूल्यों के प्रस्तुतिकरण का माध्यम भर हैं। वे स्वयं में संस्कृति नहीं। वक्त के साथ यदि माध्यम तदनुरूप न बदले तो सम्प्रेषण बाधित होता है। क्षेत्रीय बोली भाषाओं में यह लेखन उन्हें समृद्ध तो बना सकता है पर उन्हें जीवित नहीं रख सकता। न यह लेखन हिन्दी के भाषायी विकास का हिस्सा बन उसे अपने में सुदृढ़ कर सकता है। कृषि सभ्यता और सामंती व्यवस्था की बहुत सी शब्दावली तो चलन से बाहर हो मूल स्थानों में ही मर चुकी है। यदि हम अपनी करतूतों से बाज न आये तो हिन्दी की भाषायी संस्कृति और अस्मिता 'ब्यूटीफुल' में बंधकर सीमित रह जायेगी। परायी हो जायेगी।

पिछले तीन-चार दशक से शैक्षणिक सुविधाओं के कारण पूर्व का आक्सफोर्ड बने और देश के कोने-कोने से आईटीज में काम करने, पढ़ने आये विविध भाषा-भाषी समुदायों के सभी प्रकार के समारोह-आयोजनों में शामिल होने का, देखने का मौका मिला है। इस समय सभी भाषायी संस्कृतियों के दृश्य मेरी आंखों में झूल रहे हैं।

भविष्य के एक भयावह परिदृश्य की रचना करते देश के कोने-कोने से उठ रहे इस प्रश्न के दंश, उत्तर मांगते हैं। उपचार चाहते हैं कि तमिल, तेलगु, मराठी, बंगला, गुजराती आदि भारतीय भाषाओं की ही नहीं, हिन्दी की अपनी उपभाषाओं-ब्रज, अवधी, भोजपुरी, बुन्देली, मगही, मैथिली, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी और उर्दू, अंग्रेजी की जैसी भाषायी संस्कृति है क्या हिन्दी की वैसी है ?

उत्तर एक ही है- ये सब भाषायी संस्कृतियां ही हिन्दी की भाषायी संस्कृति हैं। हिन्दी की इनसे अलग अपनी कोई भाषायी संस्कृति नहीं है। हिन्दी की भाषायी संस्कृति इन्हीं उपभाषाओं, भारतीय भाषाओं की भाषायी संस्कृति का समुच्चय है।

तब, फिर पिछले दो-तीन दशक से हिन्दी की क्षेत्रीय भाषा और बोलियों में जबरिया लेखन-प्रकाशन का जो दौर और उफान उन्हें संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल कराने के साथ आया है, 'गली का राजा' बनने की हमारी कोशिश है वह क्या हिन्दी पर कुठाराघात और भाषा-बोलियों के लिए आत्मघाती नहीं है?

इस जबरिया लेखन-प्रकाशन के पीछे सबल तर्क क्षेत्रीय भाषा और बोलियों के विकास तथा आंचलिक और जनपदीय लोकसंस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक विधाओं में प्रस्तुत कर नई पीढ़ियों से जोड़ने का है। इस पक्ष पर हम जरा सोचें।

ब्रजभाषा का गद्य तब 'प्रेमसागर, सुखसागर' से आगे नहीं बढ़ सका तो आज ब्रज बुन्देली मगही मैथिली में लिखा गद्य क्या कितने पाकिस्तान की रचना कर सकेगा? यह लेखन कितनों तक पहुंचेगा और कैसे जनपदीय संस्कृति और जीवनमूल्यों को प्रस्तुत कर उन्हें अखिल भारतीय स्तर दे सकेगा?

विचारणीय पक्ष है कि क्या पिछले डेढ़ सौ वर्षों के हिन्दी साहित्य में देश के प्रत्येक प्रान्त, अंचल, जनपद की भाषायी संस्कृति जो प्रेमचन्द, फणीश्वरनाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह, गोविन्द मिश्र, राजेन्द्र अवस्थी, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा और भी बहुत से नाम यहां से जुड़ सकते हैं, के साहित्य ने भाषाई संस्कृति को जन-जन तक, देश-विदेश तक हिन्दी के माध्यम से पहुंचाई है, क्या यह जबरिया लेखन उस सांस्कृतिक अस्मिता को साहित्य के पटल पर रखने का, जन-जन से जोड़ने का विश्वव्यापी बनाने का अगला कदम है?

भावोन्माद में न बहकर जरा ठंडे दिमाग से सोचें कि भाषा और बोलियां उन्हें बोलने और पढ़ने वालों में जीवित रहती हैं। उनमें लिखना और उसका छप जाना उन्हें जीवित नहीं रखता। अवधी में लिखा तुलसीदासजी का 'रामचरित मानस' आज विश्व में उसे पढ़ने वालों से ही जीवित है जबकि अवधी का ही जायसी का 'पद्मावत' जैसा महाकाव्य अब कहीं-कहीं पाठ्यक्रमों में हो तो हो।

भाषा और बोलियां भाषायी संस्कृति के लोकसांस्कृतिक जीवनमूल्यों के प्रस्तुतिकरण का माध्यम भर हैं। वे स्वयं में संस्कृति नहीं। वक्त के साथ यदि माध्यम तदनुरूप न बदले तो सम्प्रेषण बाधित होता है। ब्रज भाषा के पहले उपन्यास 'पूंछरी कौ लौठा' में अब ब्रज और ब्रज भाषा नाम के लिए है। आज शायद उसका कोई नाम भी जानता हो किन्तु गोविन्द मिश्र के उपन्यास 'धीर समीरे' में ब्रज की पूरी भाषायी संस्कृति और सांस्कृतिक अस्मिता बोलती है। असंख्यक हिन्दी जानने वाले पढ़ने वालों तक पहुंचती है और जब तक हिन्दी अंग्रेजी से पूरी तरह अपदस्थ नहीं होती, पहुंचती रहेगी।

अस्तु, क्षेत्रीय बोली भाषाओं में यह लेखन उन्हें समृद्ध तो बना सकता है पर उन्हें जीवित नहीं रख सकता। न यह लेखन हिन्दी के भाषायी विकास का हिस्सा बन उसे अपने में सुदृढ़ कर सकता है। जीवित रहने का प्रश्न पहले उठता है। हमारे देश का युवा वर्ग जिसे इस लिखे को, इसे लिखने वाली पीढ़ी के बाद पढ़ना है। इस धरोहर का जो उत्तराधिकारी है वह तो 'हिंग्लिश' बोलता है। अंग्रेजी पढ़ता-लिखता है। इस युवा वर्ग के साथ आज देश भर में बोली समझी जाती पिछले सौ साल में कहें उसके जन्म के साथ की भाषा खड़ी बोली हिन्दी के ही टिक पाने का प्रश्न है तो यह क्षेत्रीय भाषाओं का लेखन इन बोलियों को बोलने, लिखने, पढ़ने वाली 40 से ऊपर की पीढ़ियों के साथ अल्मारियों की सज्जा बन समाप्त हो जाएगा।

कहां बचेगी ये क्षेत्रीय भाषा-बोलियां? कृषि सभ्यता और सामंती व्यवस्था की बहुत सी शब्दावली तो चलन से बाहर हो मूल स्थानों में ही मर चुकी है। बात एकदम साफ है कि जनपदीय बोलियों, क्षेत्रीय-प्रान्तीय भाषाओं से हिन्दी का और उसकी सांस्कृतिक अस्मिता का जो रिश्ता स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के बाद के साहित्य में रहा वही रिश्ता क्षेत्रीय भाषा और बोलियों के लिए, हिन्दी के लिए जीवन-संजीवनी है। यदि हम अपनी करतूतों से बाज न आये तो हिन्दी की भाषायी संस्कृति और अस्मिता 'ब्यूटीफुल' में बंधकर सीमित रह जायेगी। परायी हो जायेगी।

पांडवों की धरती पर महाभारतकालीन प्रस्तुतियां

- दिनेशसिंह रावत -

सुरसरि गंगा, यमुना, मन्दाकिनी, अलकनंदा व भिलंगना की उद्गम स्थली, पंचबद्री, पंचकेदार व पंचप्रयाग सहित अनेकानेक देवी-देवताओं के दैवत्व से दैदीप्यमान, ऋषि-मुनियों के तपोबल से तरंगित तथा पाण्डवों के पराक्रम को प्रतिबिंबित करती देवभूमि उत्तराखण्ड सदियों से ही आस्था व विश्वास का प्रमुख केन्द्र रही है।

पाण्डवों का अधिकांश समय हिमालय की इन्हीं कन्दराओं में व्यतीत हुआ। यहीं वनवास के दुर्दिन और अज्ञातवास में रहे। दुर्योधन ने उन्हें जिन्दा जलाने की योजना के तहत विरोचन से जिस लाक्षागृह का निर्माण करवाया, उसके लिए भी इसी भू-भाग का चयन किया गया। यमुना नदी के तट पर देहरादून-उत्तरकाशी की सीमा से सटे जिस स्थान लाख निर्मित महल तैयार किया गया उसका नाम ही 'लाखामण्डल' पड़ गया।

जब पाण्डव यहाँ से निकले तो यमुना नदी को पार करते हुए जंगल-जंगल होते आगे बढ़ते रहे। साधुवेशधारी पाण्डव माता कुंती के साथ कहीं लोगों के घरों में तो कहीं गुफाओं में रहकर जीवनयापन करते रहे। लोकवासियों के साथ सत्संग करते उन्होंने इस क्षेत्र में आतंक फैलाने वाले तमाम राक्षसों का वध किया। पाण्डवों के रहने से पाण्डवकालीन संस्कृति यहाँ के समाज में गंगा की भांति रच बस गई। यही कारण है कि यहां के लोगों में पाण्डवों के प्रति अगाध आस्था, श्रद्धा व विश्वास बना हुआ है।

देवयोग से पाण्डवी देवात्माएं कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के शरीर में प्रविष्ठ कर लोगों से सम्वाद करने लगती हैं। वे लोगों के कष्टों का निवारण करती हैं। पाण्डवों से सम्बंधित 'सराद' व 'जग्गी' जैसे विशेष आयोजन में लोकवाद्यों की सुमधुर तालों पर वे उन्मुक्त हो नृत्य भी करती हैं। नृत्य की यह शैली महाभारतकालीन प्रतीती कराती है जो 'पाण्डव नृत्य' के नाम से जानी जाती है। नृत्य के दौरान धर्मराज युधिष्ठिर को छोड़कर अन्य सभी पात्र अवतरित होते हैं। इनमें महिला पात्र महिलाओं पर तथा पुरूष पात्र पुरूषों पर धीरे-धीरे ढोल-दमाऊ वादकों की गति के सहारे अवतरित होते रहते है। सामूहिकता का स्वरूप लिए महाभारतकालीन विविध घटनाओं की आकर्षक प्रस्तुतियों से दर्शकों का खासा रंजन करते हैं।

गाँव-गाँव होने वाले पाण्डव सम्बंधी ऐसे आयोजन के लिए हर गाँव के बीच स्थान नियत होता है जिसे 'पण्डौं की थाती' कहते हैं। थाती पर पत्थरों से निर्मित एक चबूतरा भी बना होता है जिसमें गदा, धनुष, बाण, छुरा, बुगा इत्यादि रखे होते हैं। नृत्य के दौरान इसका उपयोग किया जाता है।

-शेष पृष्ठ सात पर

भूख और धर्म विषयक समारोह में विशिष्ट विभूतियों का सम्मान

भारत मे अन्न को बहुत महत्त्व दिया गया है। अन्न का अर्थ है, जिसके बिना काम न चले। ये प्राण अन्नगत है। हर प्राणी की जीवन यात्रा अन्नमय कोष से शुरू होती है। लेकिन भारतीय दर्शन मे यह प्रस्थान मात्र है, गंतव्य का चरम लक्ष्य नही। हमारे समाज मे कोशिश की जाती है कम खाने की और गम खाने की। ये विचार लखनफ मे 10 जुलाई को श्री श्रीमाँ प्रभुदेवी विद्या मन्दिर प्रतिष्ठान एवं शिवसिंह सरोज स्मारक समिति के तत्वावधान मे आयोजित श्रीकृष्णाप्रतापसिंह स्मृति अध्यात्म चितन व्याख्यानमाला मे 'भूख और धर्म' विषय पर डॉ. सूर्यप्रकाश दीक्षित ने अपने बीज वक्तव्य मे प्रस्तुत किये।

मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित ने धर्म के स्वरूप की शाश्वत चेतना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत मे धर्मयात्राओ की अवधारणा भूख-प्यास पर नियन्त्रण की साधना के लिए की गई। मुस्लिम संस्कृति मे रमजान के रोजे इसी साधना के प्रतीक है। अध्यक्षता डॉ. कमलेश दत्त त्रिपाठी ने की।

आयोजन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए डॉ. विद्याविन्दुसिंह ने कहा कि भूख के अनेक पहलू है। धर्म से भूख के सम्बन्ध के प्रमाण हमारे आकर ग्रन्थो से लेकर लोक परम्परा तक मे मिलते है। कभी धर्म भूख पर नियन्त्रण कर लेता है, तो कभी आपद् धर्म मार्ग नाम पर अलग-अलग व्याख्याएँ करता है।

समारोह मे विभिन्न क्षेत्रो मे ग्यारह विभूतियो को सम्मानित किया गया। इनमे हृदय नारायण दीक्षित को श्रीशिवसिंह सरोज स्मृति सम्मान, डॉ0 कमलेश दत्त त्रिपाठी को डॉ. विद्यानिवास मिश्र स्मृति हिन्दीसेवी सम्मान, रंजनकुमारसिंह को श्रीकृष्णप्रतापसिंह स्मृति कर्मयोगी मनीषी सम्मान, आनंद मिश्र 'अभय' को श्री दिलबहालसिंह स्मृति देशभक्त सम्मान, प्रो. नेत्रपालसिंह को श्रीदेवनारायणसिंह स्मृति शिक्षक सम्मान, दया चतुर्वेदी को श्रीमाँ प्रभु देवी स्मृति लोकसंगीत साधना सम्मान, डॉ. हृदय गुप्त को श्रीमाँ प्राणदेवी स्मृति लोककला साधना सम्मान, डॉ. अवधेश मिश्र को श्रीमती प्रभा पंवार स्मृति कला मनीषी सम्मान, डॉ चंद्रमोहन मिश्र को डॉ. कुंवर यशवीरसिंह स्मृति स्वास्थ्य सेवा सम्मान, कृष्णचन्द्र सहाय को पं. ब्रजभूषण मिश्र 'ग्रामवासी' स्मृति सेनानी सम्मान, डॉ. अवधेश मिश्र को प्रो. शिवमंगलसिंह स्मृति पर्यावरण संरक्षण सम्मान से विभूषित किया गया।

इस अवसर पर श्री शिवसिंह सरोज लिखित हमारे अक्षर, विद्याविन्दुसिंह की लोकप्रिय कहानियां एवं अवधी उपन्यास लड्डू गोपाल क माई तथा संत विवेक स्मारिका का लोकार्पण किया गया।

समारोह में डॉ. जगदीश गांधी, पद्मश्री श्रीमती मालिनी अवस्थी, रंजनकुमारसिंह, करुणा पाण्डेय, डॉ. कैलाशदेवीसिंह, डॉ. अवधेन्द्र प्रतापसिंह, डॉ. भारतीसिंह ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संचालन अमिता दुबे ने किया। आयोजन मे महेशचन्द्र द्विवेदी, मदनमोहन सिन्हा, भइयाजी, डॉ. टी. एन. सिंह, डॉ. सुधाकर अदीब, डॉ. आभा अवस्थी, प्रेमचन्द्र सैनी, श्रीकृष्णसिंह अखिलेश, विमल पन्त, उषा बाजपेयी, रमा सिंह, डॉ. अनिल मिश्रा, डॉ. सत्येन्द्रकुमारसिंह, डॉ. दिनेशचन्द्र अवस्थी, अनिलकुमार पाण्डेय, सतीश ग्रोवर, सुरेशकुमारसिंह, वी. के. दीक्षित, आरती पाण्डेय, ज्योति सिन्हा, कमला श्रीवास्तव, नंदकुमार मनोचा, शिवशरण दीक्षित, कुसुम वर्मा, नीरा सिन्हा आदि मनीषियो ने अपनी महत्वपूर्ण उपस्थित दी।

- प्रस्तुति सुधीर पाण्डेय

गीतकार मधुकर गौड़ को स्व. घनश्यामदास सराफ साहित्य पुरस्कार

मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा दिया जाने वाला राजस्थानी का घनश्यामदास सराफ पुरस्कार पं. मधुकर गौड़ को प्रदान किया गया। समारोह के अध्यक्ष नवनीत के सम्पादक व लेखक विश्वनाथ सचदेव ने की तथा विशिष्ट अतिथि अशोक सराफ थे। हिन्दी का पुरस्कार सुन्दरचंद ठाकुर, मराठी का प्रफुल्ल शिलेदास तथा गुजराती का पूर्णिमा एस. सेठ को प्रदान किया गया। प्रारंभ में कन्हैयालाल सराफ ने अतिथियों का परिचय दिया। स्वागत सुशील व्यास ने जबकि आभार श्रीकांत डालमिया ने ज्ञापित किया। समारोह में मानव निर्माण के संपादक महावीरप्रसाद शर्मा, प्रकाश सोनी सहित साहित्यकार, शिक्षाविद्, समाजसेवी उद्योगपति उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि यह पुरस्कार महावीर सराफ ने अपने पिता स्व. घनश्यामदास सराफ की स्मृति में शुरू किया था। इसके तहत चार भाषाओं के साहित्यकारों को यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

-कमलेश

स्मृतियों के शिखर (34) : डॉ. महेन्द्र भानावत

गांधीजी ने कन्हैयालाल को 'खादीवाला' नाम दिया

कन्हैयालाल अपने कंधों पर खादी के थान लादे, गांव-गांव, घर-घर घूमते। खादी पहनने का प्रचार-प्रसार करते। जब गांधीजी ने उन्हें देखा तो 'खादीवाला' नाम से संबोधित किया। तब से कन्हैयालाल सबके बीच 'खादीवाला' नाम से संबोधित होने लग गये और यही नाम न केवल उनकी गोत्र बना बल्कि पहचान का अन्तरंग पर्याय भी बन गया। उन्होंने कइयों के घर बनाये मगर अपने लिए कोई घर नहीं बनाया।

कन्हैयालाल एक ऐसा क्रांतधर्मी नाम है, जिसने महात्मा गांधी की स्वाधीनता, स्वराज्य तथा स्वदेशी की भावना से समग्रत: अनुप्राणित हो ब्रिटिश सामाज्य के खिलाफ चलाये जा रहे आंदोलन में सक्रिय रूप से भागीदारी की। वे अपने कंधों पर खादी के थान लादे, गांव-गांव, घर-घर घूमते। खादी पहनने का प्रचार-प्रसार करते। जब गांधीजी ने उन्हें देखा तो 'खादीवाला' नाम से संबोधित किया। तब से कन्हैयालाल सबके बीच 'खादीवाला' नाम से संबोधित होने लग गये और यही नाम न केवल उनकी गोत्र बना बल्कि पहचान का अन्तरंग पर्याय भी बन गया। घोर अभावों तथा संघर्षों के बीच सन् 1904 की शीतला सप्तमी को होल्कर स्टेट के जीरापुर नगर के निकट भंडावद गांव में पिताश्री जगन्नाथजी के घर उन्होंने जन्म लिया। वे नीमा ब्राह्मण थे।

खादीवाला ने अपने 65 वर्षीय राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन में एक-से-एक बढ़-चढ़कर जो उपलब्धियां अर्जित कीं वे आज भी शिक्षा, सेवा, स्वावलंबन तथा जनचेतना को मुखर एवं अनुप्राणित करने का सशक्त सबब बनी हुई हैं। इन उपलब्धियों में सबसे बड़ी उपलब्धि इन्दौर में 1944 में स्थापित गांधी भवन ट्रस्ट है जो देशप्रेम और समाजसेवा के आर्दश के रूप में अंग्रेज शासन की एक बड़ी चुनौती बना। इसके निर्माण के लिए उन्होंने 46 लाख रूपयों की निधि एकत्र की। उनकी दूसरी उपलब्धि 1951 में स्थापित कस्तूरबा महिला सेवा सदन है जिसके माध्यम से दलित वर्ग की सैकड़ों बालिकाएं शिक्षण प्राप्त कर रोजगारोन्मुखी बनीं। यह संस्थान चन्द्रावतीगंज में आज भी सबके लिए आदर्श बना हुआ है।

खादीवाला ने सन् 1920 में नागपुर में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन के बाद भोलाराम, बद्रीलाल आदि सहयोगियों के साथ इंदौर के छावनी क्षेत्र में कांग्रेस कमेटी की स्थापना की। प्रजामंडल की स्थापना के बाद कांग्रेस की कार्यप्रणाली को लेकर कई शिकायतें की गईं तब अखिल भारतीय कांग्रेस के महामंत्री मन्नारायण अग्रवाल को कमेटी के कार्यकलापों पर बंदिश लगाने हेतु भेजा पर खादीवादा चट्टान की भांति उसकी रक्षार्थ अड़ गये। अजमेर में 1930 में हुए असहयोग आंदोलन में भाग लेने जानेवाले सत्याग्रहियों में खादीवाला के साथ उनकी पत्नी कावेरीदेवी सहित काशीनाथ त्रिवेदी, कृष्णकांत व्यास और उनकी सहधर्मिणियों ने भी तीन-तीन माह की कठोर जेल-यंत्रणाएं भोगीं।

ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष श्रीराम आगार ने बताया कि तमाम विपरीत परिस्थितियों के बीच खादीभवन की आधारशिला रखने हेतु बंबई के मैयर नगीनदास टी. मास्टर को आमंत्रित किया गया। गांधी भवन आज भी राजनीतिक तथा रचनात्मक प्रवृत्तियों का केन्द्र बना हुआ है जो खादीवाला के संकल्प, संघर्ष, स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता का प्रतीक बना हुआ है। इससे पूर्व 7 सितंबर 1943 को जब वे महू से निर्वाचित हो इंदौर आये तो खादीवाला ने उन्हें कांग्रेस वर्किंग कमेटी में शरीक किया।

जब गांधीजी ने व्यक्तिगत सत्याग्रही के रूप में पहलीबार विनोबाजी को अनुमति दी और इंदौर के पंद्रह सत्याग्रहियों का चयन किया तो उनमें रूक्मणी बहन, कल्याणमल लाखोटिया, मिश्रीलाल गंगवाल के साथ खादीवाला भी थे जिन्होंने खंडवा जिले के मोरखका से लंगी तक पदयात्रा कर अपनी गिरफ्तारियां दीं। उन्हें नागपुर में बंदी रखा गया। वहां से मुक्ति के बाद भी वे पुन: सत्याग्रह की ओर बढ़े तब फिर से जेल में ठूंस दिये गये।

1942 में जब गांधीजी ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' की अपील के साथ 'करो या मरो' का आह्वान किया तब खादीवाला बंबई अधिवेशन से लौटते समय बीच रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिये गये। इसी प्रकार चंबल बांध के लिए 5 करोड़ रूपये संग्रहीत किये जब मुख्यमंत्री कैलाशनाथ काटजू और खादीवाला प्रदेशाध्यक्ष थे। सन् 1958 में जब पहलीबार इंदौर क्षेत्र के सांसद बने तब खादीवाला ने पांच सौ ग्रामों की पदयात्रा द्वारा ग्रामीण समस्याओं एवं चुनौतियों का निराकरण कर अभूतपूर्व लोकप्रियता अर्जित की।

गांधी भवन ट्रस्ट की प्रधानमंत्री, खादीवाला की पुत्रवधू आशा गोविंद खादीवाला से मेरी भेंट नितांत यकायक 6 जुलाई 2015 की रेल-सफर के दौरान हुई जब वे इंदौर से आ रही थीं और मैं उज्जैन से उदयपुर के लिए उस डिब्बे में सवार हुआ था। मेरे साथ मनासा के डॉ. पूरन सहगल थे। आशाजी के साथ खादीवाला गोत्र सुन मैं चौंक पड़ा। पूछ बैठा कि एक खादीवाला तो कन्हैयालाल थे जिनका मैंने बहुत नाम सुना। वे पक्के गांधीवादी थे। आशाजी बोलीं, 'मैं उन्हीं के परिवार से, उनकी पुत्रवधू हूं।' खादीवालाजी को तो मैंने नहीं देखा पर आशाजी से मिलकर हमें गौरव की अनुभूति हुई।

डॉ. पूरन ने अपनी स्मृति को अतीत-व्यतीत कर एक दिलचस्प घटना सुनाई 1957 की, जब मंदसौर में कांग्रेस का एक महत्वपूर्ण सपत्नी शिविर लगा जिसमें उन्होंने सेवादल के दस्ता-नायक के रूप में भाग लिया। उस शिविर में इंदिरा गांधी अपने पति फिरोज गांधी के साथ सम्मिलित हुईं। तब युवा खादीवाला भी अपनी सहधर्मिणी कावेरीदेवी के साथ शरीक हुए।

शिविर में भाग लेने जब खादीवाला प्रवेश करने लगे तब 18 वर्षीय पूरनजी ने उन्हें रोक दिया। खादीवाला के पास भीतर जाने का पास नहीं था। वे रूक गए। कुछ ही समय में भीतर से संकेत मिला तब उन्हें सम्मानपूर्वक प्रवेश दिया गया।

पूरनजी ने बताया कि शिविर समाप्ति के पश्चात इंदिराजी और खादीवाला ने उनकी पीठ थपथपाई और कहा- 'अपनी ड्यूटी का कठोरता के साथ निर्वाह कर तुमने अच्छा किया। ऐसी तो हमारी पुलिस भी नहीं है।' पूरनजी ने तत्परता दिखाते कहा- 'यही फर्क है। हम पुलिस नहीं, एक परिवार हैं।' इस शिविर में राष्ट्रीय अध्यक्ष ढेबरभाई ने कांग्रेस की भावी रणनीति पर ध्यान केंद्रित किया। इसका आयोजन रामपुरा निवासी जिलाध्यक्ष माणकलाल अग्रवाल के योग्य नेतृत्व में हुआ जो स्वतंत्रता सेनानी थे।

खादीवालाजी का संपूर्ण जीवन अनेक विशेषताओं से भरा था। उन जैसे लोकसेवक बिरले ही होते हैं। विधायक और सांसद बनने के बाद भी वे सड़क के, सामान्यजन के सेवक ही बने रहे। देश के विभाजन के बाद सिंध से इंदौर आये विस्थापित शरणार्थियों के सुगम जीवनयापन और आवास के उनके अनथक प्रयास सदैव ही अविस्मरणीय रहेंगे। उन्होंने कइयों के घर बनाये मगर अपने लिए कोई घर नहीं बनाया। सन् 1984 में 24 दिसम्बर को इंदौर में उनका निधन हुआ जहां पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ उनकी यादगार अन्त्येष्टि की गई।

उदयपुर में बालकवि बैरागी से भेंट के दौरान खादीवाला के प्रसंग में उन्होंने बताया कि उन्होंने भी खादीवाला के साथ गांव-गांव की परिक्रमा कर पोटलियां उठाई हैं। खादीवाला सपाट और स्पष्टवादी थे। उन्होंने कई कार्यकर्ता तैयार किए। वे हिंसा में कतई विश्वास नहीं करते थे बल्कि जो कार्यकर्ता उनके समक्ष उग्र होकर आते, उन्हें वे बड़े प्रेम से संयमित करते। जहां-कहीं रैली होती वे उसमें सबसे आगे झंडा उठाकर चलने में तनिक भी संकोच नहीं करते। रामपुरा तब इंदौर राज्य की छोटी-मोटी राजधानी थी। वहां सभी दिग्गजों से उनकी भेंट एक लंबी दास्तान का हिस्सा बनी हुई है।

सन् 1948 में जयपुर में हुए कांग्रेस अधिवेशन की याद ताजा करते हुए वैरागीजी ने बताया कि उसमें सारे देश के प्रजामंडलों का विलीनीकरण किया गया। सैकड़ों कार्यकर्ताओं के बीच पं. जवाहरलाल नेहरू का अभूतपूर्व स्वागत सबको रोमांचित कर गया। गोकुलभाई भट्ट ने भावविभोर होकर स्वागत भाषण दिया जिसकी अंतिम पंक्तियां थीं - 'किस विध करूं सम्मान तिहारो/ अधूरो मधुरो स्वागत म्हारो।'

-शेष पृष्ठ सात पर

पोथीखाना

लोकभाषा के चोखेपन की हिन्दी कविताएं

प्रस्तुति : डॉ. तुक्तक भानावत

'कोई-कोई औरत' हिन्दी कविताओं की डॉ. महेन्द्र भानावत की पहली कृति है जिसमें 25 कविताएं हैं।

डॉ. प्रभाकर माचवे ने 'जो चाहे शीर्षक लगादें' नाम से इसकी, कहिये तो, भूमिका लिखी है और नंद चतुर्वेदी ने 'महेन्द्र की कविताओं के सिलसिले में' नाम से इसे अवतरण दिया है। इस कृति पर कई विद्वानों ने अपनी प्रतिक्रियाएं भेजी हैं। उनके कुछ अंश यहां दिये जा रहे हैं-

चटूल उक्ति, चाटूक्ति, सुभाषित, चुटकुले जैसी व्यंग्य-कविता आजकल चलन में है। उर्दू में तो अकबर इलाहाबादी के जमाने से ऐसा तंत्र कविता में चला आ रहा है। मध्ययुगीन कविता में, लोकगीतों में ऐसा बहुत है जो व्यंग्यमय है पर महेन्द्र व्यंग्य के लिये व्यंग्य या केवल विद्रूप नहीं लिखते। उनके यहां एक सहानुभूति और करुणा का बड़ा ही मजेदार अस्तर या आयाम है जो महत्वपूर्ण है।

-डॉ. प्रभाकर माचवे, कलकत्ता

यह संयोग नहीं है कि महेन्द्र ने अपनी कविताओं में लोकभाषा के शब्द धड़ल्ले से काम में लिये हैं क्योंकि यही महेन्द्र की निजी दुनिया के शब्द हैं। हमने अपनी-अपनी निजी दुनिया ध्वस्त कर दी है, यह दुख हमारा है, महेन्द्र का नहीं। **-नंद चतुर्वेदी, उदयपुर**

इस पुस्तक ने मुझे जहां एक ओर चौंकाया है वहीं दूसरी ओर पुलकित, रोमांचित भी किया है। नगर-बोध के मूल में, असल में यदि ग्राम-बोध बना रहे तो अपराध काफी कम हो जाता है। हुआ यह है कि अनुगामी कविता लिखते चले गये हैं। जो जहाज से उतरा उसे पच-अनपच किया और हिन्दी से व्होमिट कर दिया। न शब्द को उसकी डेप्थ में जाना और न उसे कोई आर्थी आयाम दिया बस लग गये शब्द की फजीहत करने। प्रस्तुत संकलन में महेन्द्र की अस्मिता अखण्ड बनी हुई है और उसने भारतीयता की जिसे हम ग्रामता कहेंगे, अपनी मुट्ठी से खिसकने नहीं दिया है। व्यंग्य इसमें बहुत है और बड़ा करारा है। लोकभाषा है और उसके पूरे चोखेपन पर है। प्रखरता, प्रहारकता और स्पोकन वर्ड्स का सुसंयोजन मन को निमन्त्रित करता है।

-डॉ. नेमीचन्द जैन, इन्दौर

कविताओं में आंचलिक शब्दों की भरमार है। अच्छा होता अन्त में इन शब्दों के अर्थ दे दिये जाते। **- देवीलाल सामर, उदयपुर**

कई कविताओं ने मन को एक सर्जनात्मक उत्तेजना दी और कवि के तल-स्पर्शी अनुभवों ने मेरे भीतर की दुनिया में नया रचाव पैदा किया। महेन्द्र की रचना-शक्ति की जड़ें लोकजीवन के सांस्कृतिक धरातल में पैठती हैं और यहीं, उनसे एक अनूठा रस-बोध उपलब्ध होता है।

-मणि मधुकर, नई दिल्ली

अच्छी पुस्तक और अच्छी कविताओं के लिए हार्दिक बधाई।

- बालकवि बैरागी, भोपाल

कविताएं हृदय को छूने वाली हैं। क्या करे औरत, कोई-कोई औरत, आदि बहुत सफल रचनाएं हैं। 'अस्तित्व' नामक कविता के अनुसार मैं भी 'जब देखो तब रीता ही रीता हूं।'

-सुरेशसिंह, कालाकांकर

संकलन ने मोह लिया। महेन्द्र का कवि-रूप अब कुछ और निखार पर आया है। प्रकाशन भी कुछ बांकपन लिए है। **-डॉ. सत्येन्द्र, जयपुर**

कोई-कोई औरत की कोई-कोई कविता तो जादू सा असर करती है। गागर में सागर सा भरती है। **- निरंकारदेव सेवक, बरेली**

रचनाओं में एक सहज मौलिकता है जो मन को अपनी ओर बरबस खींचती है।

-कन्हैयालाल सेठिया, कलकत्ता

लोकभाषा के शब्दों के प्रयोग से रचनाएं और भी जीवंत हो उठी हैं। चाहे वृक्ष हो या धरती, प्रकृति सब कवि की कलम का स्पर्श पाकर अपनी व्यथा-कथा सुनाने लग गये।

-रामनारायण उपाध्याय, खंडवा

अनेक विशेषणों के साथ महेन्द्र ने अपने कवि का विशेषण भी संकलन के साथ जोड़ लिया है, यह मेरे लिए सुखद है।

-भागीरथ भार्गव, अलवर

वन संरक्षण के क्षेत्र में रहने के कारण मुझे तुम्हें क्या मालूम! कविता विशेष रुचिकर लगी। जीवनक्रम की छोटी-छोटी घटनाओं के ऊपर कटाक्ष एवं अन्तर्भावनाओं की सफल अभिव्यक्ति नेमप्लेट, बाबूसाहब तथा अन्य कविताओं में स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

-एस. के. वर्मा, उदयपुर

सभी कविताएं सूक्ष्म अनुभूतियों से युक्त उन अछूते संदर्भों को उजागर करती हैं जिनमें जीवन की पीड़ाओं का अतिरेक समाहित होता है। प्रतीक नये और प्रभावी हैं।

- कृष्णकुमार सौरभ भारती, उदयपुर

लोकविधाओं में प्रख्यात डॉ. भानावत बड़ी धमक से कविता के क्षेत्र में उतरे हैं। पुस्तक में भाषा को लोक के वजनी और गहराई तक उतरने वाले शब्दों से न केवल ताजगी मिली है बल्कि कविता लोक से कहीं हटी नहीं है जो डॉ. भानावत का लोक है। **-बसंत निरगुणे, इन्दौर**

कविताओं में कवि की सहज भावनाओं एवं संवदनशीलताओं का अच्छा प्रदर्शन हुआ है।

-आनंद चतुर्वेदी, लखनऊ

अभी तक महेन्द्र का परिचय लोककला और साहित्य के अध्येता के रूप में था। अब कविता के क्षेत्र में भी हो रहा है, यह प्रसन्नता की बात है। **-जुगमन्दिर तायल, अलवर**

कविताएं यथार्थ को छूती ही नहीं, उसे उभारती भी हैं। रिसर्चर में उन पर करारा व्यंग्य है जो सर्च भी नहीं कर रहे और अपने को छल रहे हैं। बंटवारे में बंटा लेजदेज, मजदोपहरी में परिवार का नक्शा, बाबूसाहब में दफ्तरी माहौल तथा स्टेम्प की चक्रित गाथा यूं सहज लगती है पर हमें कुछ और भी संदेश मिलता है।

अस्तित्व का रीतापन और नेमप्लेट में लटकने का सुख बहुत कुछ कह जाता है। माचवेजी ने यूं पगड़ी बंधाई को नकारा है पर सेहरा बांध दिया है।

-उदय नागोरी, बीकानेर

इन विविध रस वाली कविताओं में जितनी डूबकी लगाओ उतना ही आनंद प्राप्त होगा। सबसे बड़ा व्यंग्य कोई-कोई औरत कविता में गर्भस्थ शिशु की भावनाओं का असर वाला है।

-भूपेन्द्रकुमार वया, छोटीसादड़ी

कविताओं की भाषा कहीं चुटीली व्यंग्यात्मक है तो कहीं लोकशैली की परिचायक। क्लिष्ट हिन्दी के शब्दों का कहीं भी प्रयोग न करने के पीछे कवि का मंतव्य यह रहा होगा कि इसे सहजा से स्वीकार की जाय।

-फारूक आफरीदी, उदयपुर

इन कविताओं में लय तत्व तो कूपर की भांति हवा में उड़ गया है और तो और राग तत्व भी शून्य लीन होने जा रहा था यदि तुम्हें क्या मालूम और गुड़िया की गुड़िया नामक कविताएं आकर उसे बचा न लेती।

-सत्यनारायण व्यास, डूंगरपुर

कवि ने कविता को जहां वह अपने मूल रूप में है वहीं से उठाया है, गांठों से बेगांठी कर लागलपेटों से मुक्त सहजकर। इन कविताओं में कवि ने हमारे मनों को खूब धोया, भिगोया है। उधारा है। सुन्न पड़ी स्नायुओं को चिकोटी काट सनसनाया है। जगाया है। **-मालती शर्मा, पूना**

शीर्षक ही काफी पैना और सूझबूझ से भरा है। जिस औरत को कोई-कोई मानते हैं वह वास्तव में 'क्या करे औरत?' नामक कविता में समाई हुई है। हर औरत नपुंसकों के साये में नहीं रहती है। जो रहती है वह कोई-कोई ही होती है और उसी के दर्द को कवि ने उभारा है।

- सिरेमल सेठिया, रतलाम

इस छोटे से संग्रह ने भानावत के छिपे हुए कवि-रूप को उजागर कर दिया है और बता दिया है कि किस प्रकार अकविता को भी कविता का चोगा पहना सकते हैं। इन कविताओं में राजस्थानी रंग तो मिलेगा ही पर सबसे बड़ी बात है उनका चुटीला व्यंग्य।

- शरदेन्दु, नई दिल्ली

इन कविताओं को पढ़कर कवि की सहज अभिव्यक्ति और सहज किन्तु प्रभावमयी जीवनदृष्टि का कायल हो गया।

-राजेन्द्र सक्सेना, जयपुर

- सन् 1982 में मुंबई की राजस्थान ग्रेजुएट्स एसोसियेशन द्वारा भारतीय भाषाओं में श्रेष्ठ काव्य के रूप में पुरस्कृत।

सिद्धि तप महोत्सव का आगाज

झीलों की नगरी उदयपुर में पहलीबार खुशहाली, शान्ति, समृद्धि एवं अच्छी बारिश की कामना को लेकर 44 दिवसीय सिद्धि तप महोत्सव का शुभारंभ 14 जुलाई को हुआ। आचार्य रत्नचंद सूरिश्वर (डेहलावाला) ने बताया कि 44 दिवसीय सिद्धि तप महोत्सव में 36 दिन के उपवास होंगे। महोत्सव का आगाज उपवास से हुआ। अगले दिन भोजन फिर दो उपवास, फिर भोजन, तीन उपवास फिर भोजन, चार उपवास फिर भोजन, पांच उपवास फिर भोजन, छह उपवास फिर भोजन, सात उपवास फिर भोजन, आठ उपवास फिर भोजन के बाद 27 अगस्त को सामूहिक पारणे का आयोजन होगा। इससे पूर्व 26 अगस्त को सामूहिक वरघोड़ा निकाला जाएगा। इस तपस्या के लिए 60 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने रजिस्ट्रेशन कराया है। श्रीसंघ के अध्यक्ष डॉ. शैलेन्द्र हिरण ने बताया कि 16 जलुाई को आचार्यश्री की निश्रा में 'अहम् से अर्हम' पर विशेष आयोजन होगा। इसके तहत आराधना भवन में कृत्रिम मेरु पर्वत बनाकर उस पर भगवान शांतिनाथ को विराजमान किया जाएगा। उन पर विविध औषधियों से मिश्रित जल से 10 अभिषेक होंगे। इस दौरान एक लाख आठ बार वंदना की जाएगा जिससे शरीर में पनप रहे अहम् का विनाश होगा। संघ के उपाध्यक्ष ताराचंद जैन ने बताया कि आचार्यश्री की निश्रा में 23, 30 जुलाई और 6 अगस्त को जाहिर प्रवचनों की श्रृंखला शुरू की जाएगी। इसमें परिवार में होने वाली ज्वलंत समस्याओं के निराकरण पर जाहिर प्रवचन होंगे।

संघ के कोषाध्यक्ष राजेश जावरिया ने बताया कि पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व 18 से 25 अगस्त तक आयोजित होगा। पांचवे दिन 22 अगस्त को भगवान महावीर स्वामी का जन्म वांचन दिवस और 25 अगस्त को संवत्सरी महापर्व धूमधाम से मनाया जाएगा। चातुर्मास संयोजक अशोक जैन, सह संयोजक यशवंत जैन व अरूण बड़ाला ने बताया कि संवत्सरी महापर्व के पश्चात आराधना भवन में सभी तपस्वियों के सामूहिक पारणे होंगे। यहां तपस्वियों का बहुमान किया जाएगा।

एचआईवी/एड्स के बेहतर कार्य के लिए पीआईएमएस सम्मानित

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, उमरडा को गर्भवती महिलाओं, टी. बी. मरीजों एवं उच्च जोखिम समूहों वाले व्यक्तियों की एचआईवी की जांच एवं संक्रमित पाए जाने पर तत्काल ए.आर.टी. सेंटर पर भेज बेहतर ढंग से उनका इलाज करवाने पर नई दिल्ली के नाको एवं साथी एनजीओ द्वारा श्रेष्ठतम उपलब्धि के लिए पुरस्कृत किया गया।

पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, उमरडा के फाउण्डर बी. आर. अग्रवाल ने बताया कि एचआईवी / एड्स की दृष्टि से उदयपुर जिला अतिसंवेदनशील है। आदिवासी क्षेत्रों में कृषि की कम पैदावार, और रोजगार के साधनों की अल्पता के कारण अधिकतर लोग रोजगार की तलाश में बाहर पलायन कर जाते हैं। इसके अलावा पर्यटन की दृष्टि से बेहतर होने के कारण बाहर

के लोगों का इधर आना-जाना होता रहता है। यह आवागमन उन्मुक्त सेक्स को भी बढ़ावा देता है। यही कारण है कि इधर राष्ट्रीय राजमार्गों पर 'सेक्स ट्रेफिकिंग' की अधिकता रहती है। इन कारणों से उदयपुर को एचआईवी एड्स की दृष्टि से भी अति-संवेदनशील मना गया है।

इस प्रमुख समस्या को ध्यान में रखते हुए श्री अग्रवाल ने स्वत: प्रेरित हो अपने चिकित्सालय में आईसीटीसी प्रारंभ की और अपने परामर्शदाताओं को इस समस्या से निजात पाने के लिए निर्देशित किया। उसी के परिणामस्वरूप मात्र दस माह में ही रोगियों की समस्या का सफलतापूर्वक निदान हुआ। यह अपनेआप में बड़ी उपलब्धि कही गई और इसी कारण यह अवार्ड प्रदान किया गया।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 15 जुलाई 2017

सम्पादकीय

फरै सो चरै, बंध्यो भूखा मरै

फरै सो चरै, बंध्यो भूखा मरै अर्थात् जो हलन-चलन करता है, चलता-रहता है उसे प्राप्ति होती रहती है। वह भूखा नहीं रहता किन्तु जो बंधा हुआ है, बंधन में अर्थात् ठाला बैठा है उसे कुछ प्राप्ति नहीं होती। वह भूखा ही रहता है। इसके आधार पर समग्र जीवों को यदि हम देखें तो सभी अपनी उदरपूर्ति के लिए कुछ न कुछ परिश्रम अवश्य करते हैं। मोटे तौर पर जलचर, नभचर और थलचर प्राणियों को लें तो हमें पता चलता है कि स्थिर कोई नहीं रहता। सभी जीवों का स्वभाव स्थिर रहना भी नहीं है। चलते रहो, समूह में या फिर अकेले भी। कुछ-न-कुछ प्राप्त होगा ही। इसी सोच ने आदमी को बड़ा बनाया है। विकास का पथ प्रशस्त हुआ है। नई-नई खोजें हुई हैं और सृष्टि का पहिया कभी थमा नहीं है।

कभी-कभी कार्य करने की, जीवनधर्मिता की शैली बदल जाती है। समय के बदलाव के साथ कहें या परिस्थिति की मजबूरी कहें या फिर होड़ाहोड़ी का दर्शन-प्रदर्शन ; व्यक्ति की कार्यशैली अचानक बदलती पाई जाती है और धीरे-धीरे ऐसी कुछ मजबूरी देखने को मिलती है कि मनुष्य के बूते के बाहर की चाज हो जाती है। वह चाहे तो भी अपनी चाह के अनुसार नहीं कर सकता।

अधिक पीछे नहीं जायें तो भी आजादी के पहले का समय जिन्होंने देखा है, गृह की स्वामी महिला होती थी। वह घर-गृहस्थी की मुख्य धुरी होने के कारण सर्वाधिक श्रमशील रहती। हर कार्य के पीछे उसकी भूमिका मुख्य रहती। सारे संस्कारों की बात करें तो उनमें भी महिला ही प्रमुखता लिए रहती।

आजादी के बाद सर्वाधिक असर महिलाओं पर पड़ा। उन्होंने घर की चारदीवारी से बाहर आकर मुक्त स्वांस लिया। घूंघट में अपना मुख ही नहीं, अन्य परिधानों से भी अपने लुकेछिपे बल्कि नजरबंद शरीर को स्वच्छन्द किया। घर के सारे कार्यों से भी उसे कई तरह से मुक्ति मिली। पहले घर का सारा कार्य महिलाएं करती थीं। गिनती करें तो पता चलेगा, बाहर से कोई कार्य नहीं के बराबर होता था पर अब सारे कार्य बाहर ही होते दिखाई देते हैं। यहां तक कि प्रतिदिन घर का खाना भी सुस्वादु नहीं लगने लगा है। पहले घट्टी पीसने, कपड़े धोने, रसोई करने, सिलाई करने से लेकर हर मौसम के अनुसार खाने-पीने की चीजें तैयार करने के लिए जमीनी बैठक मुख्य रहती थी पर अब वे सब कार्य नहीं रहे और जो कुछ करने पड़ रहे हैं वे खड़े-खड़े रहने, करने से जुड़ गये हैं इसीलिए महिलाओं में अधिकतर पांव से जुड़ी, घुटनों, पगथलियों की बीमारी घर कर रही है।

पहले शिक्षा भी जैसी भी थी, श्रवणकारी मुख्य थी। अब श्रवण यानी कान से हट कर दृश्य यानी आंख से अधिक जुड़ गई है। सुनकर याद रखने की ही विशेषता हमारी परम्परा रही और श्रुतधर्म, श्रुतसाहित्य की प्रमुखता रही पर अब सारी विद्या लेखन में, पोथियों में, ग्रंथों में आ समाई है। यह सब समय की बलिहारी है। हमारे हाथ में कुछ नहीं रहा। हम परिस्थिति के दास बने हुए हैं।

-अभिवन प्रकाशन-

डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित जैन लोक का पारदर्शी मन रिचर्स फाउण्डेशन फॉर जैनोलॉजी, चैन्नई से प्रकाशित

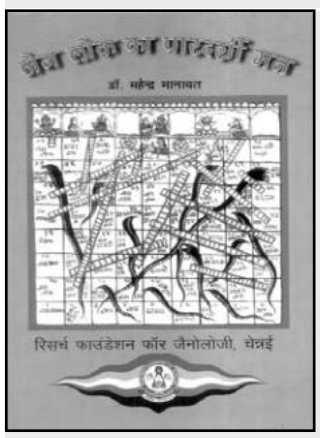

जैनधर्म के लोकजीवन, लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति, लोकपरंपराओं और लोकमान्यताओं के जाने-अनजाने पहलुओं के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करने में यह पुस्तक प्रेरणा बनेगी।

-डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया

यह पुस्तक लोकजीवन में धर्म चेतना तथा धार्मिक जीवन में लोक चेतना जगाने का संदेश देती है। धार्मिक जीवन में रची-बसी अनेक परम्पराओं पर पहलीबार सर्वथा नवीन ढंग से लेखक ने इसमें कंठासीन साहित्य को महत्व देते हुए इसके संरक्षण की प्रेरणा दी है। **- डॉ. दिलीप धींग**

मेरा उद्देश्य धर्मस्थानों में खासकर राजस्थान मेवाड़ में जो अलिखित साहित्य प्रचलन में है उसे संरक्षित और जगजाहिर करने का रहा है। इस पुस्तक में उन विधाओं की चासनी है। शुद्ध लोक परंपरा की दृष्टि से ही मेरा लेखन रहा है और अधिकतर महिलाओं में जो धार्मिक आस्था देखी और अनाम रूप में उनका जो रचनात्मक रूप रहा उसका उल्लेख करना इस लेखन का मुख्य उद्देश्य रहा है।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

शब्द रंजन के आजीवन सदस्य डॉ. प्रेमसुमन जैन

डॉ. प्रेमसुमन जैन का जन्म पहली अगस्त 1942 को जबलपुर के सिहुंडी गांव में हुआ। बनारस से जैन सिद्धान्त शास्त्री, साहित्याचार्य, पालि में एम. ए. तथा कन्नड़ में डिप्लोमा करने के पश्चात वैशाली के प्राकृत शोध संस्थान में रह जैनशास्त्र और प्राकृत में, मगध विवि बोधगया से प्राचीन भारतीय इतिहास और एशियायी अध्ययन में एम.ए. तथा उदयपुर विवि से कुवलयमाला कहा का सांस्कृतिक अध्ययन विषय पर पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

जैन धर्म दर्शन साहित्य संस्कृति के क्षेत्र में विशेष शोधानुसंधान स्वरूप जो देन प्रो. प्रेमसुमन जैन की रही उसके फलस्वरूप वे अमेरिका, जर्मनी, रोम, आस्ट्रिया आदि देशों में आमंत्रित कर विशिष्ट सम्मानों से अलंकृत किये गये। सुखाड़िया विश्वविद्यालय में जैन विद्या एवं प्राकृत के सर्वांगीण विकास तथा बौद्ध अध्ययन एवं अहिंसा केन्द्र की स्थापना की और अपने निर्देशन में 18 शोध छात्रों को पीएच. डी. कराई।

प्रो. जैन ने देश-विदेश में अनेक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग ही नहीं लिया, दर्जनों संगोष्ठियों का स्मरणीय आयोजन भी किया। कई संस्थानों को सक्रिय जुड़े रहकर यशस्वी बनाया। शोधपत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ किया तथा जैन विद्या, पालि एवं प्राकृत साहित्य-दर्शन के क्षेत्र में अनेक विद्वान तैयार किये।

लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ से डी. लिट् की सम्मानोपाधि के अलावा प्रो. जैन प्राकृत ज्ञान भारती, महावीर फाउण्डेशन, महाकवि स्वयंभू, महाकवि ज्ञानसागर, कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, आचार्य तुलसी प्राकृत ज्ञान भारती नामक प्रसिद्ध अवार्ड और अनेक सम्मान से अलंकृत हैं।

दो दर्जन से अधिक पुस्तकों के लेखक डॉ. जैन सम्प्रति 29, विद्याविहार, सुन्दरवास (उत्तरी), उदयपुर-313001 में निवास कर रहे हैं। उनका सम्पर्क नम्बर 09413371053 है।

पेड़ पर गिलहरी

जब भी याद करता हूं
दौड़ती है मेरे पैरों के पास से
उठा बिस्कुट का टुकड़ा लहराती है पूंछ
धर्म ध्वजा सी वह दौड़ती है मुंडेर पर
देख आसन्न संकट चढ़ जाती है
पास के बड़े पेड़ पर।
देख मुझे खड़ी हो जाती है
दोनों हाथ जोड़।
उद्विग्न सी बताती
नीचे खड़ा है बिलाव।

डर से नीचे गिरते हैं बच्चे
मां दौड़ती बचाने
जैसे बुला रही है मौत।
हुआ जैसे हमला आतंकी
बच नहीं पाता है कोई
कई दिनों तक सूनी रही मुंडेर
कई दिनों तक सूनी रही पेड़ की डाल।
अभी तक पड़ा है बिस्कुट
दिखता है अवशेष पूंछ का
पर दिखती नहीं गिलहरी।

- रेवतीरमण शर्मा

पत्र-पिटारी

15 जून का 'शब्द रंजन' और 'मोर्‌या आछो बोल्यो रे' पढ़कर अपने कविता संग्रह का नाम 'मोरपंख' सार्थक लगा। कुछ लोगों के 'मोरवाल' सरनेम का रहस्य भी खुला और अपनी छोटी बहिन मधुलिका का 'मोरनी बागां में बोले आधी रात मां' गीत पर किया गया नृत्य भी आंखों में छा गया। आज वह 70 वर्ष की है पर मोर का नृत्य अभी भी कम नहीं हुआ है। वर्ष 2010 में मैंने अहमदाबाद के एल.डी. कॉलेज के परिसर में मेघ को बुलाते हुए मोरों का नृत्य देखा। इतने मोर हैं वहां कि सुबह घूमने जाती तो ठगी सी रह जाती थी।

मोर के आंसू से मोरनी के गर्भ धारण की बात आपने लिखी पर आंसू क्यों आते हैं यह नहीं लिखा। वह इसलिए कि विधाता ने मोर को इतना सुन्दर शरीर दिया पर पैर कुरूप। जब उसकी निगाह अपने पैरों पर जाती है तब वह रोता है। आंसुओं से मोर और मोरनी के अलग-अलग गर्भ धारण की किवदंती ने मेरे सृष्टि के युग्मराग की पुष्टि की है जिसके तहत नर-मादा दो तार हैं।

अपने बचपन में हम धागे से हाथ की ऊंगलियों में मोर का पंजा बनाने का खेल खेले हैं। लोक में मोर मोर है और रहेगा भी। मोर के पंजे का खेल ही बच्चे नहीं खेलते वे मोरपंख भी मांगते हैं। यह कहते हुए कि मोर-मोर पंख डारि तेरे नीचे ब्याह होय। ब्रज क्षेत्र में मोरपंख की बनी झाड़ू घरों में भगवान का मंदिर साफ करने के लिए होती है। उससे झाड़ा भी लगता है। मोर के कुरूप पैरों की भी कहानी है- कहते हैं कि मैना (कहीं-कहीं कबूतर) एक बड़ी दावत खाने को मोर के पैर उधार लेगई, जो आज तक नहीं लौटाए हैं।

चिड़िया और मोर के आपके संवाद ने बता दिया कि इस धरती पर जीव का जन्म कितना उल्लासमय है पक्षी जगत में भी। 'अजमो' शब्द प्रसूता को दिये जाते औषधि रूप हरीस की प्रमुख वस्तु अजवाइन बताता है। मोरपंख के चंदोवे से बनती लड़का पैदा करने वाली औषधि का नुस्खा भी है जिसका फल मेरे भतीजे हैं। लोक परंपरा के चिकित्सा खंड में पूरा विवरण दिया है। अपने दायित्व या उपयोग करने की हिदायत के साथ यह नुस्खा मेरी ननद को एक चूड़ी वाले से मिला था। हमारी पीढ़ी के बाद यह सब कौन जानेगा?

- डॉ. मालती शर्मा, पूना

शब्द रंजन 15 जून का अंक मिला। धन्यवाद। मुख पृष्ठ पर डॉ. महेन्द्र भानावतजी का आलेख 'मोरिया आछो बोल्यो रे ढलती रात मा' ज्ञानवर्धक लगा क्योंकि मोर के बारे में इतनी जानकारी बहुत कम लोगों को है। चिड़िया और मयूर का वार्तालाप स्थानीय बोली के साथ हिन्दी में अनुवाद भी अति उत्तम लगा। अन्य लेखों के अतिरिक्त 'लोक भाषाओं में वाचिक परंपरा की संस्कृति (2)' डॉ. प्रयाग जोशी का आलेख ज्ञानवर्धक लगा साथ ही प्रेरणास्पद भी।

- विष्णु भट्ट, उदयपुर

लोक से जुड़े बिना लगता है, मनुष्य का भाव लोक अपूर्ण ही रहता है। लोक का संसार अब वैसा नहीं रहा तो वह सहृदयता भी नहीं रही। सामंती परिवेश में ऐसा था जब किसी गांव में बालजन्म होता तो सभी उसकी खुशी में उल्लसित लगते। आज की युवा पीढ़ी को तो अब वे बातें समझ ही नहीं आतीं। उसे कोई दिलचस्पी भी नहीं रह गई है।

देखिये न, नंदबाबू भी चले गये तो लग रहा है सब सूना-सूना हो गया है। कैसे एक व्यक्ति पूरे माहौल को रससब्ज रखता था। डॉ. प्रकाश आतुर, आलमशाह खान इसीलिए याद आते हैं कि वे अपने अकेले में नहीं जीते थे, सबके बीच, सबके लिए जीते थे।

शब्द रंजन में मनोहर प्रभाकरजी पर बड़ी सरस टीप लिखी। मैं भी उनसे मिला हूं। वे सचमुच में वैसे ही थे। बड़ी आत्मीय गहराई से उन्हें याद किया। अब तो लगता है, वैसे लोग भी नहीं और वैसे याद करने वाले भी नहीं हैं। मोर पर लिखा, पढ़कर तो मैं दंग ही रह गया।

वैज्ञानिक सोच, समझ अपनी जगह है और लोक के मिथक और उसकी अपनी धारणाएं अलग हैं पर यह तो स्पष्ट दिख ही रहा है कि पुरुष केवल विज्ञानी-तहजीब रखकर आनंदमय जीवन नहीं जी सकता। उसे अपने पूर्ण जीवन का मजा लेना हो तो लोक से जुड़ना ही होगा।

यह भी कि डॉ. भानावत का गद्य ही मुझे इतना अच्छा लगता है कि जब वे लिखते हैं तब पूरे लोकमय, लोक में आत्मस्थ हो डूब-डूबकर लिखते हैं। अब कहां हैं वैसे लिखने वाले। कोई उन विषयों पर लिखने का सोच भी नहीं सकता। कभी-कभी लगता है, मनुष्य की ऐसी कल्पना भी उसके अवचेतन को कैसे चेतन करती होगी? कैसे कोई ऐसा लिख लेता है? डॉ. भानावत हमारे बीच ऐसे लोकमय बने रहें। मेरी बहुत-बहुत बधाई। **-डॉ. सदाशिव श्रोत्रिय, नाथद्वारा**

खोज-खबर

डिंगल-कवयित्री प्रभाजी से भेंट

इसे संयोग ही कहा जाएगा कि भीलवाड़ा में मुझे रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत ने वहां के डाक बंगले में एक अनोखी कवयित्री से मिलाया। पड़ चितेरा श्रीलाल जोशी से मिलने के बाद रानीजी ने मुझसे कहा, अपने पास थोड़ा समय है तो चलिये खानदानी ढोलकिया ठिकाने की रानी प्रभाजी से मिलाती हूं जो डिंगल की आशु विदुषी कवयित्री हैं। उनके पति कविराज शक्तिदानजी जानेमाने इतिहास सम्राट कविराजा श्यामलदासजी के पोते हैं।

हम फटाफट पहुंच गये। प्रभाजी के मन-मस्तिष्क में शायद कविता ही गूंज रही थी। रानीजी ने अपना टेप रेकार्डर उनके पास रख दिया। प्रभाजी ने बोलना प्रारंभ किया- 'परभा नाम है। उम्र कोई छांसठ बरस की है। भाई जसकरणजी कविता करै। नाना अर पिता भी कविता करता हा।' इसके पश्चात दो मनुहारपरक दोहे सुनाये-

वे मनवारां मेलती, रण जातां माथोह।
ये मनवारां अब करै, कर बीड़ी काथोह।।
बोले अब ये ओपमा, सगती देखूं सांच।
रण पाछै ही राखजै, अंग न आवै आंच।।

रानीजी उनका परिचय पूछती रहीं। प्रभाकुमारीजी ने काव्यमय परिचय देते सुनाया-

निज मो परभा नाम, खिड़िया चारण खांप री।
जन्म जेतपुर गाम, राजस्थांन मेवाड़ में।।
पढ़ी न प्राइवेट हूं, अंजु न देख्यो स्कूल।
त्रुटिमय बांधूं ये तुकां, भोला मन री भूल।।
कहो कविता कींकर करूं, बिलकुल नाहीं बोध।
अणपढ़ री अटपट तुकां, सबजन पढ़जो सोध।।
जगण मगण जाणू नहीं, बरण मातरा तोल।
उलटा सुलटा आखरां, आई नाम अमोल।।

यह दिन 31 मार्च 1976 का था। प्रभाजी ने बताया कि बारह वर्ष की उम्र में उनका विवाह कर दिया गया। संवत् 1976 आसाढ़ सुदी चवदस, गुरुवार को उनका जन्म हुआ। भाई जसकरणजी से प्रेरणा पाकर विवाह के बाद कविता करना प्रारंभ किया। किसी गरीब को देख पहला यह छंद लिखा-

ईश्वर कीधी आतमा, नँह कीधो कोई दीन।
माता अंचल मायने, जो पय पैदा कीन।।

उन्होंने बताया कि 25 वर्ष पूर्व देवी करणीजी की स्तुति में करुणा कुंज खण्डकाव्य लिखा जो प्रकट हो चुका है। शिव-पार्वती भक्ति, राधा-कृष्ण लीला, आत्मोपदेश, महाराणा प्रताप, पाबूजी, सती सोढ़ी पर लिखा। एक सतसई प्रभा सतसई नाम से लिखी। नारी सुधार, समाज सुधार, दहेज-टीका प्रथा के विरोध में लिखा। घूमर तथा होरी राग में चरजाएं लिखीं। उन्होंने टीका प्रथा पर लिखे कुछ छंद सुनाये-

पाप मूल टीका प्रथा, अबला उर री सूल।
पटकौ सभी समाज रा, धोबा-धोबा धूल।।
मोद मिटै प्रीति घटै, आवै लोक अपार।
बिन सांटै बेटा बिकै, धिक् टीका धिक्कार।।
बैल गाय नै बेचतां, आवै लाज अपार।
बेटा-बेटी बेच दै, धिक् टीका धिक्कार।।

ये छंद सुनाते-सुनाते प्रभाजी का हिया भर आया। उन्हें समाज की अवदशा पर बड़ा क्षोभ हुआ जहां पुत्र और पुत्री दोनों को लेनदेन की वस्तु समझी जा रही है। यह देख हमने वातावरण में बदलाव लाना चाहा।

मैंने जोर दिया कि प्रभा सतसई का प्रकाशन होना जरूरी है। इससे आपकी रचनाशीलता से पाठक रू-ब-रू हो सकेंगे और आप एक सशक्त महिला रचनाकार के रूप में अपना योगदान दे सकेंगी। इस क्षेत्र में महिला लेखिकाओं का वैसे भी बड़ा अभाव है।

मुझे लगा कि मेरी बात सुन प्रभाजी को क्षणिक गंभीर सोच लगा पर वे कुछ कह नहीं पाई। बोलीं, सतसई का छपना-छपाना तो ईश्वर के हाथ में है किन्तु प्रतापजी पर उसमें जो लिखा, वह सुनाने का मन कर रहा है।

आपने अब तक मेरा ही मेरा सुना है। अच्छा होता, मैं आपसे भी कुछ सुन पाती। रानी साहिबा तो हमारे बीच सकल स्त्री-समाज का जीता-जागता गौरव और आदर्श हैं। उनके सामने हमारी क्या बिसात पर उन्होंने हमारे आगे रहकर स्त्री-समाज में एक नई चेतना और शंखनाद का स्वर फूंका है।

रानीजी ने महाराणा प्रताप सम्बंधी छंद सुनाने का इशारा दिया। प्रभाजी ने सुनाना शुरू किया-

रह्या न राण प्रताप सा, बाहुबलां मजबूत।
भिड़ जाता भड़ काल सूं, अरिदल रा जमदूत।।
उमर भर अनमी रह्यौ, केही तुरकां काप।
हुवो हेक हिंदवाण में, पुहुमी पै परताप।।
निशा दीह जिण नाम रौ, जपै हिंद नित जाप।
उमर भर अनमी रह्यौ, केही तुरकां काप।
अकबर भी नँह आवियौ, तुरकहि कहतो तांण।।
शाह निसंक न सोवतौ, पातल रो लख पांण।।
पराधीन पड़ियौ नहीं, रहियो अनमी रांण।
रजपूती रग-रग भरी, पुंणचे जिण रै पांण।।
पातल री प्यारी भई, नँह रहती न्यारीह।
सती होय साथै गई, स्वतंत्रता सारीह।।

डिंगल की कविताएं सुनाने के लिए विशेष तरह का उपक्रम रहता है। बेमन उदास मन से सुनाना तो दूर, उनका वाचन भी नहीं हो सकता। ऐसी कविताओं के लिए विशेष महका मन, प्रवर प्रकृति का रचाव, अप्रतिम हावभावों की अभव्यक्ति तथा शब्द-सम्पदा का शौर्य होना जरूरी है। जिस रंग की कविता हो, वह रंग यदि प्रकट नहीं हो सके और आंखों में वैसा चित्र उपमित न हो सके तो वह कविता ही सात मासी लगने लगती है।

पुरानी चाल के कवियों में मैंने कविराव मोहनसिंह, नाथूदान महियारिया, सांवलदान आशिया, देवकर्णसिंह राठौड़ को खूब सुना है। उन्हीं की प्रभावी परम्परा में प्रभाजी को सुन उस पौरुषी परम्परा का जैसे मैंने वैभव ही पा लिया। **-म. भा.**

अपने ही कांटों से छलनी हुआ गुलाब

गत 30 जून को कांकरोली में श्री मेवाड़ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी कान्फ्रेंस के अध्यक्ष पद के लिए हुए चुनाव में पहलीबार धर्म में राजनीति की घिनौनी घुसपैठ देखी गई। कभी नहीं सुना गया, देखा गया कि गुलाब को सुरक्षित-संरक्षित करने वाला कांटा-दल अपने अनन्य शोभावान पुष्पराज को ही छलनी करने पर उतारू हो जाता हो। कभी यह भी नहीं पाया गया कि जो जल-बूंद कमल की शोभा बनती है वही जल-बूंद उसे जंग दे जाती हो।

कांकरोली में जो कुछ हुआ, हुआ पहली बार ही। इससे पूर्व तो ऐसा मतदान ही नहीं हुआ। ऐसी उम्मीद भी आयोजकों को नहीं थी इसीलिए चुनाव की पद्धति अपनाई गई। उस चुनाव प्रक्रिया में मेवाड़ के सुनाम वे वरिष्ठजन अधिक थे जिन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ की मर्यादा को आत्मसात किया। दो-दो, तीन-तीन बल्कि चार-चार आचार्यों का आशीर्वाद सान्निध्य लिए वे इस गर्वानुभूति में थे कि इसी मेवाड़ की पावन धरा पर तेरापंथ धर्मसंघ ने जनम लिया। उस मेवाड़ के धर्मसंघ की पताका को हमें उसी भांत अक्षुण्ण बनाये रखना है जिस प्रकार राणा प्रताप ने स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता की चेतना को अखण्ड, अटूट एवं अनमोल बनाये रखने के लिए लोकजन के सतपथ का आश्रय लिए अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया था।

'जो दृढ़ राखे धर्म को, तिहि राखे करतार' का आदर्श तब से पूरे विश्व में प्रताप के प्रणवीर पौरूष का जीवन्त चैतन्य बना प्रकाश स्तंभी आलोक विकीर्ण कर रहा है। कांकरोली के इस चुनाव में हमने देखा कि जो दूषित हवा फैली, कहीं उसने केलवा की उस अंधेरी ओवरी की क्रांतधर्मी आत्म-साधना की आराधना के प्रकाशाकाश को प्रदूषित तो नहीं किया है जहां की आत्म ज्वाला थाम आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ की नींव डाली थी। उस धर्मध्वजा को आज ग्यारहवें आचार्य महाश्रमण थामे हुए हैं।

मेवाड़ तेरापंथ कांफ्रेंस की स्थापना ने आचार्यश्री तुलसी और फिर आचार्यश्री महाप्रज्ञ का शुभाशीष पाकर आदर्श एवं अतुलनीय बनाया। धर्मसंघ के योग्यतम श्रावकों ने अपने अध्यक्षीय काल में पान के पत्तों की तरह सहला-सहला कर अपना मधुर-मधुर सींचन दिया। सारे अध्यक्ष लोकमान प्रतिष्ठा अर्जित किये सर्वमान्य अध्यक्ष थे जो सदैव स्वर्ण बन अपनी कसौटी पर खरे उतरते रहे। आखिरी निर्विरोध अध्यक्ष बसंतीलाल बाबेल समाज में ही नहीं, सरकार में भी जिला एवं सेशन न्यायाधीश व उपसचिव गृह (विधि) पद पर आसीन रहते एक सुधर्मी एवं कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्रावक बने रह अतीव लोकप्रिय सिद्ध हुए। मेवाड़ कांफ्रेंस में उनका अध्यक्षीय कार्यकाल सन् 2004 से 2017 तक रहा। उन्हीं की अगुवाई में कांकरोली में चुनाव सम्पन्न हुए।

कांफ्रेंस के कुल सदस्यों की संख्या 3066 है। इस चुनाव में कुल 1285 मतदाताओं ने भाग लिया। इनमें से अध्यक्ष पद के प्रत्याशी उदयपुर के श्री राजकुमार फत्तावत को 683 तथा दूसरे प्रत्याशी फतहनगर के श्री सवाईलाल पोखरना को 602 मत प्राप्त हुए। इस तरह कुल 81 मतों के आधिक्य से फत्तावत विजयी घोषित किये गये।

इस चुनावी दंगल में कांफ्रेंस के सम्मान्य सदस्यों के अलावा वे लोग भी थे जो सदस्य नहीं थे और न ही तेरापंथ धर्मसंघ से सम्बद्ध थे। कुछ सदस्यों का तो साहसपूर्वक उत्तर था, अपना फर्ज निभाने आए हैं। ऐसे लोग भी मिले जिन्होंने कहा कि वे पिछले दिनों ही सदस्य बने हैं किन्तु उनसे कोई शुल्क नहीं लिया गया।

चुनाव की पारदर्शिता संदिग्ध थी। मतदान की पेटी एक ही होनी थी जबकि वहां दो अलग-अलग थीं। एक फत्तावत तथा दूसरी पोखरना का प्रतिनिधित्व लिए थी। सभी लोग इस व्यवस्था को अ-ठीक, अ-पारदर्शी तथा संदिग्धता की संभावना लिए कह रहे थे।

वोट देने वालों की लाइन बड़ी दुर्व्यवस्था लिए रही। जो अनुशासनबद्ध थे वे आगे बढ़ ही नहीं पा रहे थे। बीच-बीच में इतनी घुसपैठ होती रही कि सही व्यक्ति को मतदान पेटी तक पहुंचने में दो-दो, तीन-तीन घंटे लगे जो अत्यधिक थकान, बेमजा, हैरानी तथा व्यर्थ की परेशानी देने वाले सिद्ध हुए।

लोगों ने महसूस किया कि सबकुछ देखते हुए भी अनदेखी करना है कारण कि यह धर्मसंघ का मामला है जिसका आदर्श ही 'निज पर शासन फिर अनुशासन' है और वैसे भी अब कोई भी संस्था हो, उसमें प्रवेश जैसे सेवा के लिए नहीं होकर मेवा के लिए होना रह गया है। इस धर्मसंघ में श्रावक के लिए स्पष्ट निर्देश है कि यदि कहीं कोई चीज ठीक नहीं है तो वह मूक दर्शक बना न रहे। तथास्तु।

भगवान एकलिंगनाथ को श्रद्धा स्वरांजलि

उदयपुर। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर कैलाशपुरी स्थित भगवान एकलिंगनाथजी के मंदिर में प्रात: अभिषेक आरती तत्पश्चात श्रृंगार आरती, राजभोग आरती एवं दोपहर को बड़ी आरती संपन्न हुई।

इसके पश्चात सायंकालीन वेला में पुन: श्रृंगार आरती, भोग आरती, बड़ी आरती और फिर शयन आरती की गई।

इस अवसर पर महाराणा कुंभा संगीत कला ट्रस्ट द्वारा आयोजित स्वरांजली कार्यक्रम में प्रात:कालीन सत्र में बांसुरी वादक अजय प्रसन्ना ने राग अहीरी तोड़ी में बंदिश मध्य लय, द्रुत लय एवं शुद्ध सारंग के साथ ही मिश्र पीलू धुन जिसके बोल थे बरसन लागे सावन, बूंदिया आवन लागे की बांसुरी पर प्रस्तुति दी। शास्त्रीय गायन कलाकार सुरभि आर्य ने राग गुजरी तोड़ी विलंबित मध्य लय तराना पेश किया।

आस्था गोस्वामी ने शुद्ध सारंग विलंबित एक ताल में भजन माई वी ने का से कहूं तथा मध्य लय में अब मारी बात के साथ द्रुत में मन हरवा प्रस्तुत कर एकलिंगनाथ को स्वरांजलि दी। सायंकालीन वेला में कलाकार राधिका सेमसन, भुवनेश सोमकली ने वाद्य वादन के साथ भजन प्रस्तुत किए। सुधीर यार्दी, नीरज मिस्ट्री, भगवती प्रसाद, संपा सरकार, अमरदीप शर्मा, सबीर हुसैन, हरिओम वर्मा, सुभाष कांतिदास, पत्ति खां, रामेन्द्र सिंह सोलंकी ने वादन-संगत की।

घर के तवे की रोटियां

घर के तवे की रोटियां इंसान को भाती नहीं।
होटलों का स्वाद चखने जीभ शर्माती नहीं।।
अब अशोभन बात शोभन सी चतुर्दिक चल रही।
चाल जीवन की यहां अब हर कदम को छल रही।।
हाव-भावों में अदब का रंग वह दिखता नहीं।
आँख तो मिलती मगर मन मनुज अब मिलता नहीं।।
अब हिसाबों को मिलाना गलत कलमें कह रहीं।
और बहियां पेट भर यह गलतियां सब सह रहीं।

- दीनदयाल ओझा, जैसलमेर

लेकसिटी की हलचल

व्हीलस्ट्रीट का दस हजार नए बाईक रेंटल पार्टनरों को जोड़ने का लक्ष्य

भारत के सबसे बड़े बाईक रेंटिंग प्लेटफॉर्म, व्हीलस्ट्रीट डॉट कॉम ने छोटे और मध्यम शहरों में अपने आक्रामक विस्तार अभियान की घोषणा की। इस अभियान में वेंडर्स के लिए कई फायदे शामिल हैं। इन वेंडर्स में व्यक्ति और कंपनियां शामिल हैं, जो व्हीलस्ट्रीट के प्लेटफॉर्म पर बाईक रेंटल का बिज़नेस प्रारंभ करना चाहते हैं। कंपनी द्वारा प्रदान किए जा रही विकास की अपार संभावनाएं 200 से अधिक वेंडर्स के लिए काफी आकर्षक हैं, जो पहले ही एम्पैनल किए जा चुके हैं।

व्हीलस्ट्रीट के को-फाउंडर एवं सीएमओ मोक्ष श्रीवास्तव ने कहा कि व्हीलस्ट्रीट ने भारत के 30 शहरों में अपना बिज़नेस स्थापित कर लिया है और इसके पास प्रतिमाह 10,000 ग्राहकों का सक्रिय आधार है। इस समय व्हीलस्ट्रीट पर सूचीबद्ध बाईक्स की संख्या 2000 से अधिक है, जिसमें से 400 से अधिक बाईक प्रतिदिन रेंट पर दी जाती हैं। आज दुनिया में परंपरागत बिज़नेस/कंपनियां अपने डिजिटल परिवर्तन के लिए टेक्नॉलॉजी अपग्रेड की मांग कर रहे हैं। इस संबंध में व्हीलस्ट्रीट की सफलता का मंत्र ग्राहक और वेंडर फेसिंग एप्प है, जो सबसे सुविधाजनक तरीके से बाईक्स की बुकिंग/ट्रैकिंग संभव बनाता है। 80,000 रु. से 1 लाख रु. तक के बिज़नेस के साथ वेंडर्स देश में व्हीलस्ट्रीट द्वारा प्रदान किए गए बिज़नेस के अवसरों से काफी प्रसन्न हैं। व्हीलस्ट्रीट की दूसरी एक्सक्लुसिव विशेषता यह है, कि वो वेंडर्स को क्षेत्र में अपने बिज़नेस में सुधार करने के लिए परामर्श भी प्रदान करते हैं, जो क्लाईंट-वेंडर के संबंधों में व्यक्तिगत सद्भाव भी जोड़ता है। हाल ही में व्हीलस्ट्रीट ने अपना 'ट्रैवल एण्ड टूर्स' वर्टिकल लॉन्च किया है, जिसने यात्रियों को कस्टम-मेड इटीनरेरी के साथ वेंडर्स को बिज़नेस के अधिक अवसर प्रदान किए हैं। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ सालों में भारत के टू-व्हीलर बाजार ने निरंतर बढ़ोत्तरी देखी है। सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाईल मैनुफैक्चरर्स (एसआईएएम) के अनुसार, साल 2016-17 में भारत में टू-व्हीलर्स की 17 मिलियन से अधिक यूनिटें बिकीं, जिसके चलते यह दुनिया का सबसे बड़ा टू-व्हीलर बाजार बन गया। इसलिए यहां पर बाईक रेंटिंग प्लेटफॉर्म के लिए विशाल अवसर हैं।

वोडाफोन और व्हॉटसऐप में साझेदारी

भारत का प्रमुख दूरसंचार सेवा प्रदाता वोडाफोन व्हॉट्सऐप के साथ मिलकर लाखों उपयोगकर्ताओं के लिए एक ऐसा ऐप लेकर आया है जिसके द्वारा वे अपनी स्थानीय भारतीय भाषा में चैट कर सकते हैं। वोडाफोन इस तरह की पहल को लाने वाला पहला भारतीय ऑपरेटर है और लाखों उपभोक्ताओं को अपनी भाशा के माध्यम से अपने प्रियजनों के साथ जोड़े रखना चाहता है।

वोडाफोन इण्डिया में चीफ कॉमर्शियल ऑफिसर संदीप कटारिया ने कहा कि ''हमें खुशी है कि हम व्हॉटसऐप के साथ साझेदारी में उपभोक्ताओं के लिए यह खास सेवा लेकर आए हैं जिसके द्वारा वे अपनी खुद की भाषा में अपने प्रियजनों के साथ चैट कर सकते है। आज व्हॉटसऐप दुनिया भर में 50 से ज़्यादा भाषाओं में उपलब्ध है। वर्तमान में भारत में इस ऐप के 200 मिलियन मासिक उपयोगकर्ता हैं जो 10 भारतीय भाषाओं में इसका इस्तेमाल करते हैं। इस फीचर के साथ वोडाफोन ने हिंदी, मराठी, बंगाली, तमिल आदि में कस्टमाइज़्ड पेज बनाए हैं।

व्हॉटसऐप के वाईस प्रेज़ीडेन्ट नीरज अरोड़ा ने कहा कि वोडाफोन के साथ मिलकर हम भारत में कम्युनिकेशन को और अधिक आसान और सुलभ बनाना चाहते हैं। लोग बड़ी आसानी से अपनी स्थानीय भाषा में व्हॉटसऐप का इस्तेमाल कर सकते हैं और किसी भी समय किसी भी स्थान पर अपने दोस्तों और प्रियजनों के साथ जुड़े रह सकते हैं।

ऐक्सिस बैंक ने सुपर बाइक लोन्स सेगमेंट में कदम रखा

ऐक्सिस बैंक ने 500 सीसी और इससे ज्यादा की बाइक्स के लिये सुपर बाइक लोन्स को लॉन्च की घोषणा की है। बैंक ने मशहूर लीशर बाइकिंग सेगमेंट में कदम रखा है। बैंक की उत्पाद पेशक्श में बाइक की कीमत के 95 प्रतिशत तक की वैल्यू रशो का लोन शामिल है। इसके साथ ही इसके अपने अति धनाढ्य ग्राहकों के लिये विशेष ऑफर्स और प्रोग्राम्स की पेशकश भी की जा रही है।

ऐक्सिस बैंक के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर ने राजीव आनंद कहा कि हार्ले डैविडसन, ट्रायम्फ जैसे सुपर बाइक्स वाकई में प्रतिष्ठित ब्रांड हैं, जिसे भारत में कई लोग खरीदना चाहते हैं। हम सुपर बाइक्स लोन के क्षेत्र में कदम रखकर अपने ग्राहकों के इस सपने को सच बनाना संभव कर रहे हैं। क्लब्स चलाने और रोमांचक बाइकिंग गतिविधियों के चलन ने इन लग्जरी बाइक्स की लोकप्रियता को और भी बढ़ा दिया है।

इस सेगमेंट में ग्राहकों की औसत उम्र अब 30-40 साल के बीच है। कुछ साल पहले तक 40 साल के आसपास के उम्र के लोग ही इन बाइक्स के शौकीन हुआ करते है। ऐक्सिस बैंक ने अर्द्ध शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सुदृढ़ उपस्थिति दर्ज करा रखी है।

इसे इस बात का भी लाभ मिलेगा कि लग्जरी बाइक्स की मांग सिर्फ महानगरों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि टियर 2 और टियर 3 शहरों तक भी पहुंच चुकी है। टियर 2 और टियर 3 शहरों में लग्जरी बाइक निर्माताओं का विस्तार इस बात का प्रमाण है कि बाजार किसी खास क्षेत्र तक सीमित नहीं है।

रैडी बिजनेस सलूशन की पेशकश

वोडाफोन इण्डिया की एंटरप्राइज़ शाखा वोडाफोन बिजनेस सर्विसेज़ ने भारत के संगठनों के लिए सम्पूर्ण संचार समाधान जैसे वॉयस, डेटा, वायरलैस और वायरलाईन सेवाएं पेश किया है, ताकि संगठनों को उपभोक्ताओं, आपूर्तिकर्ताओं और कर्मचारियों के प्रति अधिक जवाबदेह बनाया जा सके। वोडाफोन इण्डिया के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि वोडाफोन बिजनेस सर्विसेज़ कारोबार के संचालन को अधिक प्रत्यास्थ, सहज एवं सुरक्षित बनाकर उन्हें बदलते बाज़ार के अनुसार प्रतिक्रिया देने के लिए तैयार करती है। यह विश्वस्तरीय उद्यमों, राष्ट्रीय निगमों, छोटे एवं मध्यम उद्यमों और सरकारी क्षेत्र को कनेक्टेड बनाए रखती है और इस तरह लागत में कमी लाने और मोबाइल, फिक्स्ड, इंटरनेट ऑफ थिंग्स टेकनोलोजी समाधानों में सुधार लाने में मदद करती है।

एक अनुमान के अनुसार भारत 2015 तक पांच ट्रिलियॉन डॉलर की अर्थव्यवस्था होगी, ऐसे में सरकार छोटे एवं मध्यम उद्यमों पर विषेश रूप से ज़ोर दे रही है। राजस्थान सभी आकार के उद्यमों के लिए तेज़ी से विकसित हो रहा है और भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान दे रहा है।

कार्बन और एनपीसीआई में साझेदारी

कार्बन मोबाइल्स पहला भारतीय स्मार्टफोन ब्रांड है जिसने अपने नवीनतम मोबाइल उपकरण 'के9 कवच 4जी' में भीम ऐप (भारत इंटरफेस फॉर मनी) को एकीकृत करने के लिए भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) के साथ साझेदारी की है। कार्बन मोबाइल्स के प्रबंध निदेशक प्रदीप जैन ने कहा कि भीम समर्थित 'के9 कवच 4जी' स्मार्टफोन की पेशकश के साथ कार्बन मोबाइल्स ने अपनी सेवाओं के पोर्टफोलियो को मजबूत करने के साथ-साथ भारत सरकार के 'डिजिटल इंडिया' अभियान में योगदान करने एवं अल्प नगदी अर्थव्यवस्था के निर्माण की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। 'के9 कवच 4जी' का निर्माण एक अद्वितीय सुरक्षा व्यवस्था 'कवच' के साथ किया गया है। कार्यकारी निदेशक शाशीन देवसरे ने कहा कि इसकी मदद से हम स्मार्ट दूरसंचार व्यवस्था का लाभ व्यापक जनसमुदाय तक पहुंचाना चाहते हैं जिससे कि वे डिजिटल भारतीयों के समूह में शामिल हो सकें। भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीए) के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ए. पी. होटा ने कहा कि सहयोग के चलते लाखों उपभोक्ता कार्बन स्मार्टफोन में भीम ऐप से जुड़ सकेंगे। अतिरिक्त सुरक्षा खूबी कवच के इन-बिल्ट के चलते ग्राहक बैंकिंग संबंधी अपनी जानकारी या धन पर किसी खतरे की आशंका से मुक्त हो सकेंगे।

कंट्री इन्नस एंड सुइट्स बाई कार्लसन की शुरूआत

कंट्री इन्न एंड सुइट्स बाई कार्लसन ने राजस्थान में अपनी शुरुआत की। यह होटल कोटा शहर में मौजूदगी वाला अब तक का पहला अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड है। शहर के केंद्र में मौके की जगह पर स्थित, कंट्री इन्न एंड सुइट्स बाई कार्लसन 85 आधुनिक कमरों की पेशकश करता है।

कार्लसन रेजीडोर होटल ग्रुप के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, दक्षिण एशिया, राज राणा ने कहा कि कंट्री इन्न एंड सुइट्स बाई कार्लसन कोटा का स्वागत करते हुए मुझे खुशी हो रही है। इस समय दुनिया भर में 557 प्रोपर्टीज परिचालन में हैं या उनका विकास हो रहा है। कंट्री इन्स एंड सुइट्स बाई कार्लसन उच्च स्तर के मध्यम पैमाने वाले होटल वर्ग में अग्रणी है।

हम प्रेमसिंह बजोर और प्रियव्रत सिंह के साथ गठजोड़ कर खुश हैं। हम होटल की पहचान, बी आवर गेस्ट (हमारे मेहमान बनिए) सेवा दर्शन को आगे बढ़ा रहे हैं। राज राणा ने कहा कि 45000 वर्गफीट में फैले इस होटल में आरामदेह बिस्तर, निशुल्क हाई-स्पीड वाई-फाई, कांपलीमेंट्री नाश्ता, मिनीबार, कॉफी और चाय बनाने की सुविधा, सैटेलाइट टीवी, कमरे में भोजन आदि शामिल है। फिटनेस के प्रति जागरूक अतिथियों के लिए छत पर स्वीमिंग पूल, स्पा, स्टीम रूम और स्वास्थ्य क्लब का एक सुइट है।

बजोर ग्रुप ऑफ कंपनीज के चेयरमैन प्रेम सिंह बजोर ने कहा कि मैं कंट्री इन्न एंड सुइट्स बाई कार्लसन कोटा का उद्घाटन करते हुए गर्व महसूस कर रहा हूं। मुझे यकीन है कि अतिथि इस होटल को थकान मिटाने, आराम करने और नई ताजगी हासिल करने के लिहाज से एक जोरदार स्थान मानेंगे। बजोर ग्रुप ऑफ होटल्स के प्रबंध निदेशक प्रियप्रत सिंह ने कहा कि इस शानदार अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड के तहत अपना होटल खोलने के लिए हम कार्लसन रेजीडोर होटल ग्रुप के साथ साझेदारी करके उत्साहित हैं।

जे. हैम्पस्टीड के नये कैटलॉग का अनावरण

जे. हैम्पस्टीड ने द अनंता, कोडियात रोड में ऑटम-विंटर 2017-18 के लिए नया कैटलॉग जारी किया। मोहक कैटलॉग में पहले कभी नहीं देखी गई ऊनी कपड़ों की श्रृंखला सुंदर स्टाइल प्रदान करती है। कैटलॉग का अनावरण सियाराम सिल्क मिल्स लि. के डायरेक्टर-मार्केटिंग अवनीश पोद्दार द्वारा किया गया।

बेहतरीन सूटिंग रेंज ऊन मिश्रित वस्त्रों की विशेषता मुख्य रूप से इस कैटलॉग के लिए बनाई गई है, अतिसुंदर शिल्प कुशलता द्वारा उपलब्ध रेंज जो तापमान परिवर्तन, पहनने में बेहतर और हल्की चमक आपके लिए बेहद अनुकूल है। ये प्रीमियम कपड़े निश्चित रूप से आरामदायक शैली और अद्भुत फैशन के सही अर्थ का अनावरण करेंगे। जे. हैम्पस्टीड की शैली, व्यक्तित्व और श्रेणी की प्रतिबद्धता निस्संदेह आपको एक अलग श्रेणी प्रदान करेगी।

इंडियाफर्स्ट लाइफ शाखा का शुभारंभ

इंडियाफर्स्ट लाइफ इंश्योरेंस की शाखा का मधुबन में मंगलवार को शुभारंभ हुआ। उद्घाटन इंडियाफर्स्ट

लाइफ इंश्योरेंस के निदेशक बिक्री एवं विपणन ऋषभ गांधी, बैंक ऑफ बड़ौदा के महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख एन. सी. उपेती एवं उप महाप्रबंधक सुरेंद्र शर्मा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर ऋषभ गांधी ने कहा कि उदयपुर में इस नई शाखा के शुभारंभ से हमारी वितरण क्षमता और मजबूत होगी तथा यह राजस्थान में हमारे विकास को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। राजस्थान हमेशा से हमारे लिए एक प्रमुख बाजार रहा है, और इस शाखा के शुभारंभ से क्षेत्रीय स्तर पर हमारी पहुंच का विस्तार होगा।

एन. सी. उपेती ने कहा कि इंडियाफर्स्ट लाइफ इंश्योरेंस के द्रुतगामी विकास को देखते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। उदयपुर राजस्थान के प्रमुख शहरों में से एक है, और इस स्थान पर एक समर्पित एवं पूर्णकालीन सेवा शाखा की मौजूदगी से कंपनी के उपभोक्ता आधारित उपक्रमों को काफी फायदा मिलेगा, साथ ही ग्राहकों को अधिक कुशलतापूर्वक सेवा उपलब्ध कराने में भी मदद मिलेगी।

भाग्यशाली विजेता को मिली रॉयल एनफील्ड

उदयपुर। रेडियो सिटी 91.9 एफएम ने अपने मेगा अभियान 'रेडियो सिटी की बुलेट- सीज़न 2' के समापन की घोषणा की। इसका फाईनल लेकसिटी मॉल में आयोजित किया गया, जिसमें देवेंद्र गौतम ने रॉयल एनफील्ड बुलेट जीती। इस

अभियान में उदयपुर से 3,50,000 से अधिक रेडियो सिटी श्रोताओं ने हिस्सा लिया। ईवीपी एवं नेशनल हेड - प्रोग्रामिंग, मार्केटिंग एवं ऑडेसिटी - रेडियो सिटी, कार्तिक कल्ला ने कहा कि 'रग रग में दौड़े सिटी' सिद्धांत के साथ यह रेडियो नेटवर्क डिजिटल, प्रिंट और आउटडोर माध्यम से उदयपुर के हर कोने में पहुंचा। इस अभियान में रेडियो सिटी ने श्रोताओं से उनके सिटी-ऑन-एयर के बारे में प्रश्न पूछे गए। हर घंटे एक भाग्यशाली विजेता को बुलेट मोटरसाईकल की चाबी भेंट की गई, जिससे उन्हें ग्रांड फाईनल के लिए हरी झंडी मिली। इनमें देवेंद्र गौतम की चाबी से मोटरबाईक स्टार्ट हो गई और उन्होंने रॉयल एनफील्ड बुलेट जीत ली। कार्तिक कल्ला ने कहा कि रग-रग में दौड़े सिटी हमारे ब्रांड के सिद्धांत के केंद्र में है। यह हर शहर के श्रोताओं के लिए रेडियो सिटी को उपयोगी बनाने के सिद्धांत को परिभाषित करता है। सिटी की बुलेट ने उदयपुर के दिल की आवाज श्रोताओं तक पहुंचाई तथा इसे उनके लिए आकर्षक बनाया।

पांडवों की धरती पर.....

(पृष्ठ एक का शेष)

इस समूह नृत्य में हर पात्र को विशिष्ट परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है। उस पात्र को प्रंचड अग्नि की ज्वाला के बीच जाकर बैठ जाने, लोहे की गर्म रक्तिम सबल को हाथों से उठा जिव्हा से चाटकर ठंडा कर देने, कोयले चबाने तथा अपनी वंशावली का बखान करने जैसी कठोर क्रियाओं से रू-ब-रू होना होता है।

यह भी कि किस व्यक्ति पर कौन-सा पाण्डव पात्र अवतरित हुआ है इसका पता लगाने के लिए उसे परामपरागत शैली में अपनी पूरी वंशावली का बखान-गान करना होता है जिसमें वंशावली बयां करने की इस प्रक्रिया को 'छाड्या लगाना' कहा जाता है। इसे देव-संयोग ही कहा जा सकता है कि ग्राम्यजीवी किसी महिला या पुरूष पर जब कोई पाण्डव पात्र अवतरित होता है तो वह अपनी पूरी वंशावली को ऐसे बयां करता है मानो उसे लम्बे समय तक अभ्यास कराया गया हो जबकि ऐसा कुछ भी कर पाना सम्भव नहीं है किन्तु जो इस कसौटी पर खरा उतरता है तभी वह पाण्डव नृत्य में शामिल होने का अधिकारी बन पाता है।

जो भी हो, सच तो यह है कि उत्तराखण्ड असंख्य ऋषि-मुनियों की तपोस्थली होने के कारण उनके तप-बल के प्रभाव से यहां राम, कृष्ण, अर्जुन, भीम जैसों की आदर्श गाथाएं लोगों की कंठाहार बनी हुई हैं।

गांधीजी ने कन्हैयालाल को.....

(पृष्ठ दो का शेष)

खादीवाला ने यहां भी अनेक कार्यकर्ताओं के साथ भाग लिया। वे सदैव कार्यकर्ताओं का सम्मान करते। उनका ख्याल रखते और सहयोग करने में सदा आगे रहते।

सन् 1945 में वैरागीजी ने कई नामचीन नेताओं के बस्ते उठाये। उनके साथ भ्रमण किया। स्वतंत्रता सेनानियों की महत्वपूर्ण चिट्ठियां इधर-उधर पहुंचाने का कार्य किया पर जेल नहीं गए तो स्वतंत्रता सेनानी भी नहीं बने। देश की वर्तमान स्थिति को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए वैरागीजी ने कहा कि अब आंदोलन और हलचल ज्यादा है। वर्तमान में 23 पार्टियां ऐसी हैं जो कांग्रेस से निकली हैं। लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा नहीं चल रही है। चलने के नाम पर सबकी जबान चल रही है। ऐसे में खादीवाला जैसे लोग याद आते हैं जो चिराग लेकर ढूंढने में भी बमुश्किल ही मिल पाते हैं।

राजस्थान में विजयसिंह पथिक के नेतृत्व में बिजोलिया आंदोलन ने गांधीजी को हर दृष्टि से आलोड़ित और प्रेरित किया। इसी आंदोलन से गांधीजी को सूझा कि स्वदेशी वस्तुओं का निर्माण कर विदेशी वस्तुओं का त्याग किया जा सकता है। विकल्प के रूप में उन्होंने रेजा बुनना स्वीकारा। उनकी देखादेख पूरे देश में चरखा कातना और खादी बनाना शुरू हो गया।

मेवाड़ में तो घर-घर में चरखा गृहिणियों का आजीविका चक्र बना। चरखे के साथ कंठासीन गीत-बोल 'गांधीजी चरखो दे गया' ने तो वह गूंज दी कि मेरे कानोड़ जैसे छोटे से गांव से ही अपने घरों से दर्जन भर स्वतंत्रता सेनानी वंदे मातरम् का नारा लिए निकल पड़े। बलाई-बुनकरों ने चरखे पर कताई कुकड़ियों के तारों को अपने औजारों से समर्थ बना रेजा बुनना प्रारंभ कर दिया। मेवाड़ के गांव-गांव रेजा बुनने वालों के शटर गूंजने लगे। बम्बोरा की रेजा बुनाई श्रेष्ठतर होने के कारण वहां के रेजों ने मेवाड़ की सीमा लांघी। ऐसे रेजे के पछेवड़े खूब चले।

खादीवाला का प्रभाव यहां तक पड़ा कि अनेक युवकों ने खद्दर पहनना शुरू कर दिया। प्रभात फेरियों में 'झंडा ऊंचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' गीत-गान के साथ जो स्कूली बच्चे बढ़चढ़ कर भाग लेते, उनमें मैं स्वयं सदैव आगे रहा। एक बार तो पुलिस का एक जवान अपने हाथ में डंडा घुमाते हमें भयभीत करता थाने ले गया। वहां हमें कुछ देर बिठाये रखा और बाद में 'जाओ, भाग जाओ' कहकर हमें वहां से भगा दिया।

ईतरत सिद्दीकी बनी उदयपुर स्टार शैफ

उदयपुर। सरपाईज तौर पर मिले मसालों और चीजों से उसे अपनी रैसेपी से तीन घण्टों में तैयार कर नामी गिरामी शैफ को खिला उदयपुर स्टार शैफ और यंग शैफ चैलेन्ज का खिताब जितना आसान काम नही था लेकिन उदयपुर की ईतरत सिद्दीकी एवं जयसिंहगढ़ के शैफ सोनत और शैफ सोहन ने अपने खाना बनाने के शौक को खिताब में बदल दिया।

शौर्यगढ़ रिसोर्ट और स्पा द्वारा आयोजित फूड फेस्टिवल में प्रतियोगिता जीतने के बाद अब इनकी पहचान स्टार शैफ के रूप हैं। उदयपुर स्टार शैफ की रनर अप मानसी श्रीमाली रही जबकि यंग शैफ चेलेंज में के रनर अप एचआरएच ग्रुप ऑफ हॉटल्स के शैफ विनिता एवं शैफ दीपक रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि रोहन साबले और शैफ कुणाल कपूर एवं अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। मैनेजर रूपम सरकार ने बताया कि फूड फेस्टिवल के समापन समारोह में महक दुबई के कुलीनरी डायरेक्टर सतीश अरोड़ा और मुंबई की शतभी बासु को लाइफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया। फूड फेस्टिवल प्रतियोगिता में विजेता को शौर्यगढ रिसोर्ट की और से 21,000 रूपये का चैक एवं रनर अप को 11,000 रूपये का चैक, शील्ड व सर्टिफिकेट रोहन साबले, शैफ कुणाल कपूर, शैफ मनीष जोशी, शैफ लव माथुर, शैफ कासीम खान द्वारा प्रदान किये गये। उदयपुर स्टार शैफ में 104 प्रतिभागियों की 60 की रेसीपी में से टॉप 10 को चुना गया वहीं यंग शैफ चैलेन्ज में उदयपुर की 10 प्रमुख होटल्स के शैफ ने भाग लिया। विजेताओं के साथ ही अन्य प्रतिभागियों को भी शील्ड व सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया।

इससे पूर्व फूड फेस्टिवल के अंतिम दिन प्रात: कॉकटेल बेवरेज वर्कशॉप में मिक्सोलॉजीस्ट एमी बी श्रॉफ ने काकटेल और मोकटेल के बारे में जानकारी दी। दोपहर में शैफ विमल धर ने फ्यूजन फूड डेमो में परंपरागत राजस्थानी व्यंजनों को कांटिनेंटल फ्यूजन में प्रस्तुत किया। शाम को शैफ कुणाल कपूर ने कम्फर्ट फूड वर्कशॉप में उदयपुरराईट्स को सरल तरीके से स्वादिष्ट भोजन एवं व्यंजन बनाने के गुर सिखाये।

स्टार शैफ प्रतियोगिता में मनाली कपूर, विषाखा विरवानी, राजवीर सिंह, विनिता जैन, अलीशा सीयाल, सीमरन सीधवानी, निक्षय पुरी, दिक्षा छेनानी तथा यंग शैफ चेलेंज में रेडिसन ब्ल्यू, रेडिसन लेकसिटी, पार्क एक्जोटिका, रमाडा, लेंडमार्क, रॉयल रीट्रीट, लेकएण्ड एवं ट्राईडेंट के शैफ ने भाग लिया।

टाटा मोटर्स और राजस्थान मरूधरा ग्रामीण बैंक में समझौता

उदयपुर। राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में टाटा यात्री वाहनों के खरीदारों के लिए आसान एवं सुविधाजनक वित्त सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से टाटा मोटर्स लि. ने राजस्थान मरूधरा ग्रामीण बैंक (आरएमजीबी) के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं।

राजस्थान मरूधरा ग्रामीण बैंक का किसी कार निर्माता कम्पनी के साथ यह पहला समझौता है। इस सन्दर्भ में दोनों कम्पनियों के वरिष्ठ अधिकारियों ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये है।

इस समझौते के तहत राजस्थान मरूधरा ग्रामीण बैंक टाटा मोटर्स के यात्री वाहन ब्राण्ड्स पर कम प्रोसेसिंग फीस, ओवर ऑल फण्डिंग, विशेष ब्याज दरों एवं विशेष योजनाओं के जरियें वित्त सुविधा उपलब्ध करायेगा। राजस्थान मरूधरा ग्रामीण बैंक के इन विशेष रीटेल फाइनेंस प्रस्तावों में टाटा मोटर्स की नई कार के मॉडल की ऑन रोड़ कीमतों में कम ब्याज दर पर 90 प्रतिशत तक ऋण उपलब्ध करायेगा। यह लाभ बैंक के शहरी एवं ग्रामीण दोनों ग्राहकों को प्राप्त होगा। इस अनुबंध पर रमेश डोरायराजन, हैड ट्रेड फाइनेंस, टाटा मोटर्स एवं एस.पी. श्रीमाली, चेयरमैन राजस्थान मरूधरा ग्रामीण बैंक ने हस्ताक्षर किये।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	**11000/**
विशिष्ट सदस्य	**5000/**
आजीवन सदस्य	**3000/**
शब्दरंजन के सहयात्री	**1000/**
साहित्यिक चौपाल	**500/**
वार्षिक संस्थागत	**300/**
वार्षिक व्यक्तिगत	**250/**

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(Shabd Ranjan, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

स्टार स्पोर्ट्स फर्स्ट लांच

उदयपुर। स्टार स्पोर्ट्स 1 तमिल के लांच के साथ अपने सफल क्षेत्रीय प्रवेश के बाद, स्टार स्पोर्ट्स ने खेल के करीब लाने के अपने लगातार प्रयास में भारत के पहले निजी फ्री-टू-एयर स्पोर्ट्स चैनल स्टार स्पोर्ट्स फर्स्ट को लांच किया। इस चैनल का प्रसारण 21 जुलाई को डीडी के एफटीए डीटीएच प्लेटफॉर्म पर शुरू होगा। यह खेल प्रशंसकों और उत्साहियों को अपने पसंदीदा खेल को किसी भी सदस्यता शुल्क के भुगतान किए बिना हिंदी में देखने की इजाजत देगा। अन्य खेलों के अलावा, चैनल बहु-प्रतीक्षित वीवो प्रो कबड्डी लीग सीजन 5 को भी प्रसारित करेगा जो 28 जुलाई को हैदराबाद में शुरू होगा।

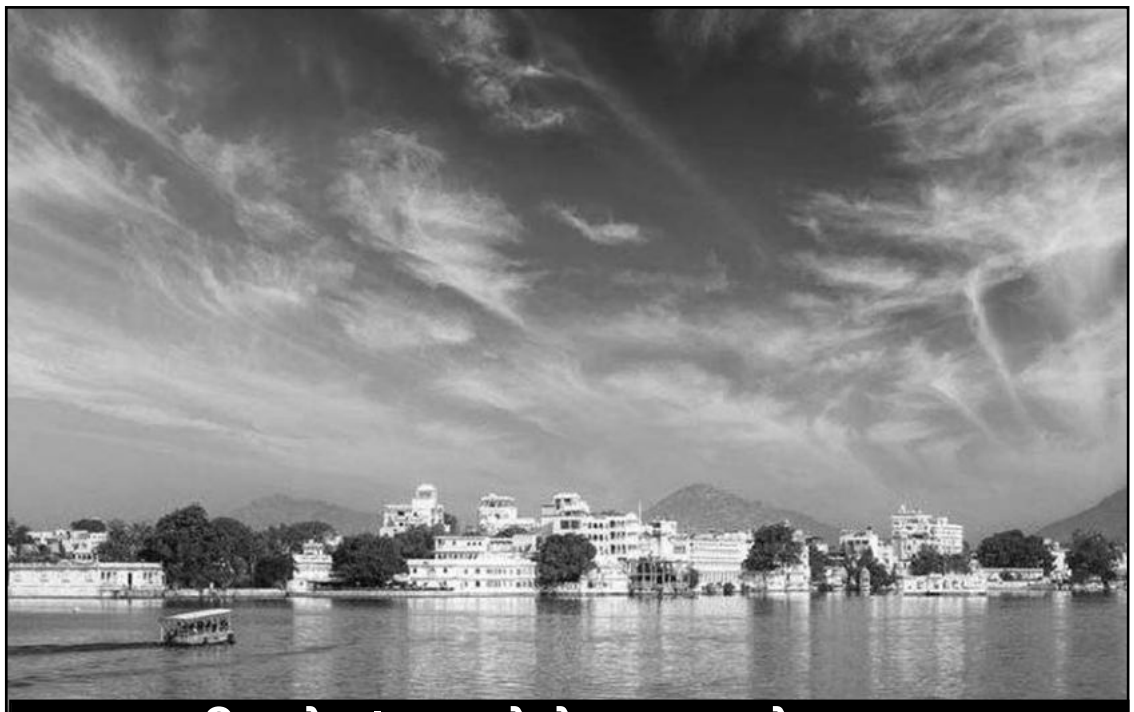

दुनिया के सुंदर शहरों में उदयपुर 14वें स्थान पर

खूबसूरत शहर उदयपुर ने विश्व पटल पर भारत का नाम रोशन किया है। उदयपुर ने ना सिर्फ ट्रेवल एंड लीजर मैगज़ीन मे अपनी जगह बनाई अपितु टॉप 15 मे आने वाला भारत का इकलौता शहर बन गया है। न्यूयॉर्क की ट्रेवल एंड लीजर मैगजीन के सर्वे मे यह बात सामने आई है। मैगजीन ने विश्व के सबसे अच्छे शहरो मे शामिल करते हुए उदयपुर को 89.54 नंबर दिए है। पर्यटन स्थलो, संस्कृति, भोजन, खरीदारी, आतिथ्य सत्कार, बेहतरीन सुविधाएं उपलब्ध करवाने और विभिन्न संस्कृति से लोगो को जोड़ने की वजह से लेकसिटी को टॉप 15 शहरो मे शुमार किया गया है। यह मैगजीन हर वर्ष पांच मिलियन रीडर्स के माध्यम से यह सर्वे करती है। विश्व के विभिन्न डेस्टिनेशन पर की गई यात्रा के अनुभव साझा करने के साथ ही पर्यटक शहरो की स्कोरिंग करते है। टॉप 15 की इस सूची मे उदयपुर 14वे स्थान पर है।

कान्यो मान्यो

ओ सासु गाळ मत दीजौ

लारला दनां जठ्यें देखो वठ्यें ब्याव, रतजगा, घर प्रवेश अर जनेव लैवण री जाणै होड़ मचगी। ठौड़-ठौड़ जीमण जीम-जीम नै थाकग्या। तपती धरणी माथै पसीनां रा रैला, लुवां रा थपेड़ा अर सरद-गरम स्यूं मांदगी भी वधगी। कान्यो भी अणी चपेट में आयग्यौ। बोल्यो के एक-भींत पड़ौस री बालकी नै काल विदा कीधी तो आखी गवाड़ी रा लोग सुबक्यां लेवा लागग्या। आदम्यां रा अंगोछा, लुगायां रा ओढ़णा अर बालक्यां री चुनर्यां गीली व्हैगी। गायां रंभाणो मांड्यौ। बाछड़्यां पटकावा लागगी। हांड हड़कावा लीधा। गंडकां गेलो रोक लीधो।

पराये देस जावणवाळी लाडो सबस्यूं लाड़लड़ावै। घर रा डांडा केलू सुस्त पड़ग्या। सबरी लाड़ली हरिये वन री कोयलिया रा ढूलीफूंत्या नै कुण हळरावै दुळरावैगो। परींडो रीतो रै जावेळो। सेल्यां गोठ्यां लार कुण आठी फूंदी रा खेल खेलसी। मावड़ किणरा नखरा देखसी। बावड़ किणरी टग्गी सूं रीझसी। रसपतरा हूड़ा वीर किणरी डांट खाय मन री मोद पूरी करसी। म्हाराज ने पूनम रो पेट्यो कुण घाळसी। बेवड़ो कुण भरसी। कुण लैवड़ा खाती चरकली री टपल मांय कणीको करसी। कांगसी रै दांती घाळ कुण बैरा माऊ री जुंवां काड़सी। मीरकी री लीकां मारसी।

मान्यो बोल्यो धीरो रै, ढबजा नीं तौ म्हारी आंख्यां रौ समंदर उफाण खाई तो म्हारौ जीवणो हराम हो जाई। म्हारी गवाड़ी मांय नगतरी नै विदा करणी बगत लुगायां सास नै भळावण दैरी ही- 'ओ सासू गाळ मती दीजै'। गीत सुण म्हारौ कळेजो भर आयो। अणी घर गवाड़ नै छोड़ण रौ दुख लै जा बाळकी पराये घर जायरी है वंडी किस्मत रा कांकरा नी वैजाई। कान्यो बोल्यो, जमाईराज तो सगळाई देखै। भण्योगण्यो कमावतो रूड़ो रूफाळो सगळा नै लै लबै। सुसरो भी नुवी लाड़ी नै अछन-अछन राखै पण सास नै जद मद चढ़ जावै तो वा अंकै नी ढबै अर वात-वात मांय सासपणां री डोफर घाळै। वंडै मन में बैठ जावे कै ववु-लाड़ी नै माथै चढ़ायदां तो कान कतरवा लाग जावै अण खातर अंकुश जरूरी है। कान्यो अर मान्यो दोई हाथ जोड़ आकाश नाळै अर अरज करै सगळा देव, म्हांरी बाळकी री साय राखजौ अर सासुमां रौ माथो सदाई ठंडोटीप फ्रीज कियां रीजौ। दशामाता डाड़ाबावजी रगस्या करजौ।

विकास के लिए इण्डस्ट्री, एग्रीकल्चर, बिजली और पानी सर्वाधिक महत्वपूर्ण : गडकरी

उदयपुर। केन्द्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि हमारे देश में न पानी की, न बिजली की और न पैसों की ही कोई कमी है, फिर भी हम विकास के मामले में अमरीका, जर्मनी और जापान जैसे देशों के मुकाबले बहुत पीछे हैं। इसका मुख्य कारण विजन की कमी

और नई तकनीक का अभाव होना है। अगर यह दोनों हमारे पास आजाएगी तो हम विकासशील बड़े देशों के समकक्ष खड़े हो जायेंगे। श्री गडकरी शुक्रवार को होटल रेडीसन ब्ल्यू में आयोजित इंडियन रोड़ कांग्रेस की 212वीं बैठक के शुभारम्भ अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

उन्होंने देश के विकास में इण्डस्ट्री, एग्रीकल्चर, बिजली और पानी को सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि देश का 10 प्रतिशत पानी तालाबों और कुओं में, 20 प्रतिशत सीधा जमीन में और 70 प्रतिशत पानी सीधा समुद्र में चला जाता है। बाढ़ में हमारा पानी व्यर्थ बह जाता है। इसका तकनीकी समाधन आवश्यक है जिसके लिए अन्य देशों में जो कार्य हो रहे हैं उससे लाभ उठाना होगा।

गडकरी ने देश में पानी के अकाल की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि 11 राज्यों में पानी की गम्भीर समस्या है। इसका कारण पानी का ठीक ढंग से उपयोग नहीं होना है। हम ऐसी तकनीक को लाएं जिससे व्यर्थ बह रहे पानी को रोककर 60 से 65 प्रतिशत पानी सिंचाई के काम में लें। इससे हमारी कृषि समृद्ध होगी तथा किसानों को आत्महत्या करने की नौबत नहीं आएगी।

उन्होंने हिन्दुस्तान जिंक का उदाहरण देते हुए कहा कि सरकार के समय यह प्रतिष्ठान बड़े घाटे में चल रहा था किंतु ज्योंही इसे निजी क्षेत्र में दिया तब से यह कई गुना अधिक लाभ देने लग गया है। इससे अन्य प्रतिष्ठानों को सबक लेना चाहिए। वे जिंक की कार्य प्रणाली का अध्ययन करें कि किस तरह घाटे से बचा जाकर अधिकाधिक लाभ प्राप्त किया जाना चाहिए।

उन्होंने देश की अफसरशाही पर तंज कसते हुए कहा कि यह विडम्बना है कि अफसरशाही देश में नई तकनीक को आने नहीं देती है। वह उस तकनीक के आने से पहले ही उसके बारे में नकारात्मक सोच प्रदर्शित कर देते हैं। अपने मजाकिया लहजे में उन्होंने कहा कि अफसर लोग अपनी पत्नी से ज्यादा फाइलों से प्यार करते हैं। फाइलों से वे 6-6 महीने से लेकर सालों तक चिपके रहते हैं लेकिन अब सरकार बदल गई है। देश बदल रहा है ऐसी स्थिति में अफसरों को भी बदलना होगा और अपने को सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए देश के बदलाव और विकास के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कठिनपरिश्रम करना होगा।

गडकरी ने कहा कि वर्तमान में उनका मंत्रालय देश में तीन एक्सप्रेस हाईवे नर्बदा एक्सप्रेस हाईवे, ब्रह्मपुत्र एक्सप्रेस हाईवे तथा यमुना एक्सप्रेस हाईवे पर तेजी से काम कर रहा है। ये सभी हाईवे ग्रीन हाईवे बनाए जाएंगे।

इस हेतु हाइवे के किनारे ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाए जायेंगे। उन्होंने कहा कि एक पेड़ कटने पर दस पेड़ लगाएं जाएं पर केवल संख्या की दृष्टि से पेड़ लगाने की खानापूर्ति न हो अपितु दो-तीन साल बाद उसके परिणाम भी देखें।

यदि 10 में से सात पेड़ जिन्दे हैं तो हमारा काम सफल होगा अन्यथा कमी होने पर संबंधित व्यक्ति के लिए सजा का प्रावधान होगा। उन्होंने उदाहरण दिया कि जिस ठेकेदार ने समयावधि के एक दिन पहले काम कर दिया उसे हमने एक लाख रूपये का पुरस्कार दिया किंतु जिसने एक दिन भी समयावधि में देरी कर दी उस पर डेढ़ लाख का जुर्माना करने में भी कोई कसर नहीं रखी। पेड़ों के महत्व पर उन्होंने बड़े ही भावुक अंदाज में कहा कि एक पेड़ काटते हैं तो लगता है जैसे एक आदमी का मर्डर हो गया।

गडकरी ने दो टूक शब्दों में कहा कि अब रोड एक्सिडेन्ट के मामले में सीधे ही इंजीनियरों की जिम्मेदारी तय होगी और उनके खिलाफ कर्यवाही की जाएगी। वहां पर होने वाली मौतों की जिम्मेदारी उनकी स्वयं की होगी। दुर्घटना में होने वाली मौतें किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं की जा सकती है।

गडकरी ने कहा कि बहुत जल्दी ही नया मोटर व्हीकल एक्ट पास होने वाला है उसमें इन सब चीजों का बारीकी से ध्यान रखा गया है। रोड बने या ब्रिज किन्तु क्वालिटी और सेफ्टी के मामले में कोई समझौता नहीं होगा। उन्होंने इंजीनियरों से कहा कि वे बेहतर से बेहतर डिजाइन बनाएं। क्वालिटी के साथ किसी तरह का समझौता न करें। तय समय और कम दर पर जिसका भी गुणवत्तायुक्त श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर कार्य होगा सरकार की ओर से उसका विशेष सम्मान किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि मैं मंत्री हूं, मेरा काम है काम करना। जो भी मेरे पास आता है उसका काम करना, नहीं तो उसका समाधान निकालना अगर काम नहीं हो पा रहा हो तो सीधे ही मना करना। लेकिन किसी को टरकाना और बार- बार चक्कर नहीं कटवाना चाहिये। यह टराकाने की संस्कृति भी लगाम लगाने में हम काफी हद तक सफल रहे हैं।

नई टेक्नोलोजी के तहत देश में सीमेन्ट कांक्रीट की सड़कें बनाने का संकल्प लिया गया है। कांक्रीटी सड़कें ऐसी होगी जो तीन पीढ़ियों तक चलेगी। इसी तरह इलेक्ट्रिक कारें, बसें तथा स्कूटर बाजार में उतारे जाएंगे जिनसे पेट्रोल-डीजल की भारी बचत होगी और, खर्चा कम भी आएगा। यह सब होगा तो देश समृद्ध और विकसगामी बनेगा।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।